Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثۡلُهَا ۚ فَمَنۡ عَفَا وَاَصۡلَحَ فَاَجۡرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيۡنَ

(सूरः शूरा : 41)

अनुवाद : और बदी का बदला, की जाने वाली बदी के बराबर होता है। अतः जो कोई माफ़ करे इस शर्त के साथ कि वह इस्लाह करने वाला हो तो इस का अज्र अल्लाह पर है निसन्देह वह ज़ालिमों को पसंद नहीं करता।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 8
अंक-9

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

9 शाबान 1444 हिज्री कमरी, 3 अमान 1402 हिज्री शम्सी, 2 मार्च 2023 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

क़ैद में रखे जानवर की मौत पर अज़ाब

(2365) हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : एक औरत को बिल्ली की वजह से अज़ाब हुआ जिसे उसने बंद कर रखा था। यहां तक कि वह भूख से मर गई तो वह उस बिल्ली की वजह से आग में दाख़िल हुई। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह भी फ़रमाया (उस से कहा गया) तू ने उसे क़ैद रखा और अल्लाह ही बेहतर जानता है न तू ने उसे खिलाया और न पिलाया और न ही उसको छोड़ा कि वह ज़मीन के कीड़े खाती।

तीन अश्ख़ास जिनकी तरफ़ अल्लाह तआला क़ियामत के दिन शफ़क़त की नज़र नहीं करेगा

(2369) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तीन लोग ऐसे हैं जिनसे अल्लाह तआला क़ियामत को न बात करेगा और न उनकी तरफ़ (शफ़क़त की) नज़र करेगा। एक वह शख़्स जिसने अपना तिजारती सामान बेचने के लिए क़सम खाई कि मुझे उसके लिए इस से बहुत ज़्यादा दिया जाता था जो अब दिया जाता है, जबकि वह झूठा है और एक वह शख़्स जिसने अस्र के बाद झूठी क़सम इस लिए खाई कि वह किसी मुस्लमान शख़्स का माल मार ले और एक वह शख़्स जिसने अपना बचा हुआ पानी रोक लिया। अल्लाह तआला फ़रमाएगा : आज मैं भी अपना फ़ज़्ल तुझ से रोकता हूँ, जैसा कि तू ने वह बची हुई चीज़ रोक ली थी, जो तेरे हाथों ने नहीं बनाई थी।

(सही बुख़ारी, भाग 4 किताब मसाका, प्रकाशन 2008 कादियान)

★ ★ ★

जो शख़्स चाहे कि हम उससे प्यार करें और हमारी दुआएं नयाज़ मंदी और सोज़ से उसके हक़ में आसमान पर जाएं वह हमें इस बात का यक़ीन दिलावे कि वह ख़ादिम-ए-दीन होने की सलाहीयत रखता है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

एकांतवास

हज़रत अकदस एकांत को बहुत पसंद फ़रमाते थे। इस बारे में फ़रमाया

"अगर ख़ुदा तआला मुझे इख़्तेयार दे कि एकांत और जलवत में से तू किस को पसंद करता है। तो उस पाक ज़ात की क़सम है कि मैं एकांत को इख़्तेयार करूँ। मुझे तो खींचते खींचते मैदान-ए-आलम में इसी ने निकाला है, जो लज़्ज़त मुझे एकांत में आती है इस से बजुज़ ख़ुदा तआला के कौन वाक़िफ़ है। मैं क़रीब 25 वर्ष तक एकांत में बैठा रहा हूँ और कभी एक लहज़ा के लिए भी नहीं चाहा कि दरबार-ए-शौहरत में कुर्सी पर बैठूँ। मुझे स्वभाविकतः इस से कराहत है कि लोगों में मिलकर बैठूँ, परंतु आदेशित कार्यों से मजबूर हूँ। फ़रमाया: मैं जो बाहर बैठता हूँ या सैर करने जाता हूँ और लोगों से बातचीत करता हूँ ये सब कुछ अल्लाह तआला के अमर की तामील की बिना पर है।"

ख़ादिम-ए-दीन ही हमारी दुआओं का मुस्तहिक़ है

ताईद-ए-इलाही पर अगर कोई क़लम उठाए या कोशिश करे तो हुज़ूर बड़ी क़दर करते थे। इस बारह में फ़रमाया :

"अगर कोई ताईद-ए-दीन के लिए एक लफ़्ज़ निकाल कर हमें दे तो हमें मोतीयों और अशर्फ़ियों की झोली से भी ज़्यादा बेशक़ीमत मालूम होता है। जो शख़्स चाहे कि हम उस से प्यार करें और हमारी दुआएं नयाज़ मंदी और सोज़ से उसके हक़ में आसमान पर जाएं। वह हमें इस बात का यक़ीन दिलावे कि वह ख़ादिम दीन होने की सला-हीयत रखता है। बार हा कसम खा कर फ़रमाया है कि हम प्रत्येक वस्तु से महिज़ ख़ुदा तआला के लिए प्यार करते हैं। बीवी हो, बच्चे हो, दोस्त हों। सबसे हमारा ताल्लुक़ अल्लाह तआला के लिए है

अहद-ए-दोस्ती की रियायत

"मेरा यह मज़हब है कि जो शख़्स एक दफ़ा मुझसे अहद-ए-दोस्ती बाँधे। मुझे इस अहद की इतनी रियाइत होती है कि वह कैसा ही क्यों न हो और कुछ ही क्यों न हो जाये, मैं उस से संबंध विच्छेद नहीं कर सकता। हाँ अगर वह ख़ुद संबंध विच्छेद कर दे तो हम लाचार हैं, अन्यथा हमारा मज़हब तो यह है कि अगर हमारे दोस्तों में से किसी ने शराब पी हो और बाज़ार में गिरा हुआ हो और लोगों का हुजूम उस के गर्द हो तो बुला ख़ौफ़ لَوۡمَۃَ لَائِمٍ के उसे उठा कर ले आएँगे। फ़रमाया : अह्द-ए-दोस्ती बड़ा क़ीमती जोहर है इस को आसानी से ज़ाए कर देना ना चाहिए और दोस्तों से कैसी ही न-गवार बात पेश आवे उसे इग्माज़ और तहम्मुल के महल में उतारना चाहीए।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग प्रथम, पृष्ठ 423 मुद्रित कादियान 2018)

★ ★ ★

इन्सान साधारणतः माता पिता की वैसी ख़िदमत नहीं कर सकता, जैसी की माँ बाप ने उसकी बचपन में की थी इस लिए फ़रमाया कि हमेशा दुआ करते रहना कि हे ख़ुदा तू उन पर रहम कर, ताकि जो कमी रह जाए दुआ से पूरी हो जाएगी।

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरत बनी इसराईल आयत नंबर : 25 से 26

وَاخۡفِضۡ لَہُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحۡمَۃِ وَقُلۡ رَّبِّ ارۡحَمۡہُمَا کَمَا رَبَّیٰنِیۡ صَغِیۡرًا ○ رَبُّکُمۡ اَعۡلَمُ بِمَا فِیۡ نُفُوۡسِکُمۡ ؕ اِنۡ تَکُوۡنُوۡا صٰلِحِیۡنَ فَاِنَّہٗ کَانَ لِلۡاَوَّابِیۡنَ غَفُوۡرًا ○

(अनुवाद और (उन पर) रहम करते हुए उनके लिए ख़ाकसारी का बाज़ू झुका दे और (उन के लिए दुआ करते वक़्त) कहा कर (कि हे मेरे रब उन पर (इसी तरह) मेहरबानी कर क्योंकि उन्होंने (मेरी) बचपन की हालत में मेरी परवरिश की थी। तुम्हारा रब जो कुछ (भी) तुम्हारे दिलों में हो उसे (सबसे) बेहतर जानता है अगर तुम नेक होगे तो (याद रखो कि) वह बार-बार रुजू करने वालों को बहुत ही बख़्शने वाला है) की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

और उन के लिए रहमत के साथ अपने इन्किसार के बाज़ू नीचे गिरा दे। और यह दुआ करता रह कि हे मेरे रब तो उन पर रहम कर। क्योंकि उन्होंने बचपन में मेरी परवरिश की है।

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

हे अल्लाह ! मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) जिस चीज़ की तरफ़ बुलाते हैं अगर वह हक़ है तो सातों बार इंही का तीर निकाल, मैंने सात बार क़ुरआ डाला और सातों बार आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का तीर निकला

इख़लास-ओ-वफ़ा के पैकर बदरी सहाबा हज़रत अबू लुबाबा बिन अब्दुल मंज़र रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अबू ज़य्या बिन साबित बिन नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अंसा मौला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अबू मरसद अबी मरसद, हज़रत अबू मरसद कन्नाज़ रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत सलीत बिन क़ैस बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत मजज़र रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत रफ़ाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हो बिन मालिक बिन अजलान रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अबू उसैद बिन मालिक राबिया रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल असद रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत खल्लाद बिन राफे रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अब्बाद बिन बशीर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत हातिब बिन अबी बलता की सीरत के कुछ पहलूओं का ईमान वर्धक वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 27 जनवरी 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُلِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

आज साहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के वर्णन में से ही कुछ वर्णन करूँगा। पहला जो वर्णन है वह हज़रत अबू लुबाबा बिन अब्दुल मंज़र रज़ियल्लाहु अन्हो का है। उनके बारे में कुछ और रिवायात मिली हैं वह भी पेश कर देता हूँ। तफ़सील तो पहले भी आ चुकी है।

अल्लामा इब्ने अब्दुल बरआ अपनी लेखनी अल् इस्तेयाब में लिखते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो क़ुरआन-ए-मजीद की आयत وَ اٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّ اٰخَرَ سَيِّئًا (सूरः : 102) कि "और कुछ दूसरे हैं जिन्हों ने अपने गुनाहों का एतराफ़ किया उन्होंने अच्छे आमाल और दूसरे बदआमाल मिला-जुला लिए" मैं फ़रमाते हैं कि यह आयत अबू लुबाब और उनके साथ सात आठ या नौ आदमियों के बारे में नाज़िल हुई। यह हज़रात ग़ज़वा तबूक से पीछे रह गए थे। बाद में शर्मसार हुए और ख़ुदा के हुज़ूर तौबा की और अपने आपको सतूनों के साथ बांध लिया। उनका अच्छा अमल तौबा और उनका बुरा अमल जिहाद से पीछे रहना था।

(अल् इस्तेयाब फ़ी मारेफ़तिल सहाबा, भाग 4 पृष्ठ 1741 अबू लुबाबा बिन अब्दुल मुनज़िर दारुल जलील बेरूत)

मजमे बिन जारिया से रिवायत है कि हज़रत ख़न बिंत ख़िदम हज़रत खनसा बिन्ते खिदाम रज़ियल्लाहु अन्हो की विवाह में थीं जब आप रज़ियल्लाहु अन्हो गज़वा अहद के दिन शहीद हुए। फिर हज़रत ख़नसा बिंत-ए-ख़िदा रज़ियल्लाहु अन्हो के वालिद ने आपकी शादी मज़ेमा क़बीला के एक आदमी से की जिसे आप नापसंद करती थीं। हज़रत ख़न्सा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुईं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनका निकाह खंडित कर दिया तो हज़रत ख़न्सा से हज़रत अबू लुबाबा ने शादी की जिससे हज़रत साइब बिन अबू लुबाबा हुए।

(معرفة الصحابة لابی نُعَیم ،جلد1، صفحہ250، أُنَیس بن قَتَادَةؓ، دار الوطن للنشر)

अब्दुल जब्बार बिन वर्द से रिवायत है कि मैं ने इब्ने अबी मुलेका से सुना, वह फ़रमाते थे कि अब्दुल्लाह बिन अबी यज़ीद का कहना है कि हज़रत अबू लुबाबा रज़ियल्लाहु अन्हो हमारे पास से गुज़रे हम उनके साथ थे यहां तक कि वह अपने घर में गए उनके साथ हम भी घर में दाख़िल हुए। हमने देखा कि एक शख़्स फटे पुराने कपड़े में बैठा है। मैं ने उन से सुना वह कहता था कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जो शख़्स क़ुरआन को ख़ुश-आवाज़ से न पढ़े वह हम में से नहीं है।

(سنن ابی داؤد، کتاب الوتر ،باب اسْتِحْبَابِ التَّرْتِيلِ فِي الْقِرَاءَةِ، حدیث نمبر:1471)

फिर वर्णन है हज़रत अबू ज़याह बिन साबित नोमान रज़ियल्लाहु अन्हो की एक रिवायत में है कि हज़रत अबू ज़याह रज़ियल्लाहु अन्हो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ ग़ज़ व-ए-बदर के लिए निकले थे लेकिन पिंडली पर पत्थर की नोक लगने से ज़ख़म आया जिसकी वजह से वह वापस लौट गए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदर में उनका हिस्सा रखा।

(अल् बिदाय वन् नहाया, جزء5، صفحہ252، کتاب المغازی فصل غزوہ بدر العظمیٰ دار الھجر بیروت1997ء)

फिर हज़रत अंसा मौला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वर्णन है। हज़रत अंसा रज़ियल्लाहु अन्हो की कुनिय्यत अबू मसरुह और कुछ के नज़दीक अबू मिसरः वर्णन हुई है। (الاصابة فی تمییز الصحابة، جلد1، صفحہ283، اَنَسہ مولی النبیؐ، دار الکتب العلمیة بیروت لبنان، 1995ء) हज़रत अंसा रज़ियल्लाहु अन्हो सिरात मे पैदा हुए थे। सरात यमन और हब्शा के क़रीब एक जगह है। (ओसोदुल गाबा मारेफ़तिल सहाब, भाग 1 पृष्ठ 301 अंसा रज़ियल्लाहु अन्हा, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान)(रोशन सितारे, भाग 1 पृष्ठ 145)

उनकी हिज्रत के बारे में वर्णन हुआ है कि जब आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने मदीना की तरफ़ हिज्रत की तो आप हज़रत कुलसूम बिन हिदम रज़ियल्लाहु अन्हो के पास ठहरे जबकि कुछ रवायात के मुताबिक़ आप हज़रत साद बिन ख़ैसम रज़ियल्लाहु अन्हो के पास ठहरे। (अल् तबकातुल कुबरा लेइब्ने साअद भाग 3 पृष्ठ 35 अंसा मौला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान, 1990 ई.)

इमाम ज़ुहेरी वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ज़ुहर के बाद मुलाक़ात करने वालों को मिलने की इजाज़त दे दिया करते थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से उन लोगों के लिए हज़रत अंसा रज़ियल्लाहु अन्हा इजाज़त लिया करते थे। (अल् तबकातुल कुबरा ले-इब्ने साद , भाग 3 पृष्ठ 36 अंसा मौला रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान,1990 ई. अंदर घर मुलाक़ातियों की सूचना देना आप रज़ियल्लाहु अन्हो का काम था।

फिर वर्णन है हज़रत मरसद बिन अबी मरसद। इमरान बिन मन्नाह कहते हैं कि जब अबू मरसद और उनके बेटे मरसद अबी मरसद ने मदीना की तरफ़ हिज्रत की इस वक़्त आप दोनों हज़रत कुलसूम बिन हिद के हाँ ठहरे। मुहम्मद बिन उमर कहते हैं कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ग़ज़वा-ए-अहद में भी शरीक हुए और सिरया रजी वाले दिन आप रज़ियल्लाहु अन्हो की शहादत हुई।

(अल् तबकातुल कुबरा ले-इब्ने साद , भाग 3 पृष्ठ 35 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2017 ई.)

हज़रत मरसद के एक बेटे उनेस बिन अबी मरसद अल् गनवी का वर्णन मिलता है। आपको अनस भी कहा जाता है मगर उनेस अक्सर मिलता है। आप रज़ियल्लाहु अन्हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ फ़तह मक्का और ग़ज़वा हुनैन में थे।

(ओसोदुल गाबा, भाग 1पृष्ठ 306 उनैस बिन मुरसिद दारुल कुतुब

इल्मिया बेरूत 2008 ई.)

इब्ने हज्र ने हज़रत मरसद की शहादत सफ़र चार हिज्री वर्णन की है। (तेहज़ीब अल्तेहज़ीब, भाग 6 पृष्ठ 642 مَرْثَد بن ابی مَرْثَد،دار الحدیث قاهر-2010)

फिर वर्णन है अबू मरसद कन्नाज़ बिल हुसैन गनवी रज़ियल्लाहु अन्हु का।

उनका नाम कन्नाज़ था। वलदीयत हुसै बिन यरबू। आप रज़ियल्लाहु अन्हो के नाम के बारे में इख़्तेलाफ़ पाया जाता है कुछ के नज़दीक आपका नाम कन्नाज़ बिन हुसैन जबकि कुछ के नज़दीक हुसैन बिन कन्नाज़ था और यह भी कहा गया है कि उनका नाम एमन था मगर ज़्यादा मशहूर कन्नाज़ बिन हुसैन थे। (الاصابة فی تمییز الصحابة لابن حجر عسقلانی،باب الکنی،ابو مَرْثَد الغنوی،جزء 7،صفحه 305،دار الکتب العلمیة بیروت)

हज़रत अबू मरसद रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ और उनके साथी थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो लंबे क़द के मालिक थे और आप रज़ियल्लाहु अन्हो के सिर के बाल घने थे।

(अल् तबकातुल कुबरा, भाग 3 पृष्ठ 34 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

हज़रत अबू मरसद और उनके बेटे हज़रत मरसद रज़ियल्लाहु अन्हु दोनों को ग़ज़ व-ए-बदर में शिरकत की तौफ़ीक़ मिली। आप रज़ियल्लाहु अन्हो के बेटे हज़रत मरसद रज़ियल्लाहु अन्हु वाकेआ रजी में शहीद हुए।

(ओसोदुल गाबा फ़ी मारेफ़तिल सहाब इब्ने असीर, भाग 6 पृष्ठ 276-277 ابو مَرْثَد الغنوی،دار الکتب العلمیة بیروت) पहले वर्णन हो चुका है।

हज़रत अबू मरसद रज़ियल्लाहु अन्हु के एक पोते हज़रत उनैस बिन मरसद रज़ियल्लाहु अन्हु नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबी थे। वह फ़तह मक्का और ग़ज़वा हुनेन में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमराह थे।

(ओसोदुल गाबा फ़ी मारेफ़तिल सहाब ले इब्ने असीर, भाग 1 पृष्ठ 306 उनैस बिन मरसद, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

वर्णन हुआ है कि रबीउल अव्वल दो हिज्री को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तीस शुत्र सवार मुहाजेरीन का एक दस्ता अपने चचा हज़रत हमज़ा बिन अब्दुल मुत्लिब रज़ियल्लाहु अन्हु की क़ियादत में मदीना से मशरिक़ की जानिब सैफ़ुल बहर इलाक़ा ईस की तरफ़ रवाना फ़रमाया। हज़रत हमज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु और उनके साथी जल्दी जल्दी वहां पहुंचे तो क्या देखते हैं कि मक्का का रईस-ए-आज़म अबू जहल तीन सौ सवारों का एक लश्कर लिए उनके इस्तक़बाल को मौजूद है। दोनों फ़ौजें एक दूसरे के मुक़ाबले में सफ़-आरा करने लग गईं और लड़ाई शुरू होने वाली ही थी कि इस इलाक़े के रईस मजदी बिन अम्र अल् जोहनी ने जो दोनों फ़रीक़ों के साथ ताल्लुक़ रखता था दरमयान में पड़ कर बीच बचाओ करवाया और लड़ाई होते होते रुक गई। यह मुहिम सरिया हमज़ा बिन अब्दुल मुतलिब के नाम से मशहूर है। (उद्धृत सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु एम.ए, पृष्ठ 329)

हज़रत अबू मरसद सफ़हह भी इस सरिया में शामिल थे। रिवायत में वर्णन मिलता है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सबसे पहला झंडा हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को बाँधा था और इस सरिया में हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु का यह झंडा हज़रत अबू मरसद रज़ियल्लाहु अन्हो उठाए हुए थे।

(अल् तबकातुल कूबरा ले-इब्ने साद, भाग 2 पृष्ठ 3-4 मुद्रित दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

फिर वर्णन है हज़रत सुलेत बिन क़ैस बिन अम्र रज़ियल्लाहु अन्हो का। हज़रत सुलेत रज़ियल्लाहु अन्हो का ताल्लुक़ अंसार के क़बीला ख़ज़रज की शाख़ बनू अदी बिन नज्जार से था।

(ओसोदुल गाबा फ़ी मारेफ़तिल साहबा, भाग 2 पृष्ठ 538 सलीत बिन क़ैस, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान)

हज़रत सलीत माता का नाम हज़रत ज़ुग़ीबा बिंत ज़ुरार रज़ियल्लाहु अन्हा था जो हज़रत उसद बिन ज़ुरार की बहन थीं।

(अल् तबकातुल कुबरा ले-इब्ने साद, भाग 3 पृष्ठ 388 सली बिन क़ैस, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान, 1990 ई.)

एक रिवायत में वर्णन है कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हो के भाई वलीद बिन वलीद को ग़ज़व-ए-बदर के अवसर पर हज़रत सलीत बिन कैस ने क़ैद किया था।

(अमता उलअस्मा, भाग 6 पृष्ठ 248 औलाद اولاد عم ام سلمة, दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत लुबनान, 1999 ई.)

फ़तह मक्का के अवसर पर अंसार के क़बीला बनू माज़िन का झंडा हज़रत सलीत बिन केस रज़ियल्लाहु अन्हो के पास था।

(امتاع الاسماع،جلد 7،صفحه 169-168،واما اللواءات والرأیات، دار الکتب العلمیة بیروت لبنان،1999ء)

इसी तरह ग़ज़व-ए-हुनैन के अवसर पर भी बनू माज़िन का झंडा हज़रत सुलेत के पास था

(किताब मग़ाज़ी, भाग 3 पृष्ठ 896 ग़ज़वा हुनैन, मकतबा आलेमूल कुतुब)

तेराह हिज्री में जबकि कुछ के मुताबिक़ चौदह हिज्री के आग़ाज़ में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के दौर-ए-ख़िलाफ़त में जसर की जंग का वाक़िया पेश आया। यह जंग मुस्लमानों और फ़ारसियों के दरमयान मौजूदा इराक़ के इलाक़े में लड़ी गई। इस जंग में मुस्लमानों के सिपहसालार हज़रत अबू उबैद बिन मसऊद तक़फी थे इसलिए इस जंग को जसर की जंग अबी उबैद भी कहते हैं। इस जंग के मज़ीद नाम हैं जंग-ए- मरवा जो दरिया-ए-फ़ुरात के मग़रिबी किनारे पर वाक़्य एक जगह का नाम है। जंग क़ुस्सुन्नातिफ़। यह भी दरिया-ए-फ़ुरात के मशरिक़ी किनारे पर कूफ़ा के क़रीब एक जगह का नाम है। इस जंग में दो हज़ार ईरानी तलवार के नीचे हुए जबकि कुछ रवायात के मुताबिक़ छः हज़ार ईरानी मारे गए। मुस्लमानों की तरफ़ से कुछ रवायात के मुताबिक़ इस जंग में अठारह सौ मुस्लमान शहीद हुए जबकि कुछ के मुताबिक़ चार हज़ार मुस्लमान शहीद हुए जिनमें सत्तर अंसार और बाईस मुहाजेरीन भी शामिल थे। इन शुहदा में हज़रत सलीस बिन कैस रज़ियल्लाहु अन्हो भी शामिल हुए थे। कुछ के नज़दीक उस मार्का में सबसे आख़िर में शहीद होने वाले हज़रत सलीस बिन कैस रज़ियल्लाहु अन्हो थे।

(ماخوذ از الاکتفاء بما تضمنه من مغازی رسول الله والثلاثة الخلفاء،جلد 2،جزء 2،صفحه 129-124،عالم الکتب بیروت)(ماخوذ از البدایة والنهایة لابن کثیر،جلد 4،صفحه 46،مکتبة المعارف بیروت)(ماخوذ از اٹلس فتوحات اسلامیه از احمد عادل کمال،حصه دوم،صفحه 90، معرکه جسر،مکتبه دار السلام)(البدایة والنهایة،جلد 9،صفحه 594، مطبوعه دار هجر بیروت)(معجم البلدان،جلد 4،صفحه 349،دار الصادر بیروت لبنان)(سیر اعلام النبلاء سیر الخلفاء الراشدون،صفحه 100، مطبوعه مؤسسة الرسالة بیروت 1996ء)

कुछ इतिहासकार के मुताबिक़ आप रज़ियल्लाहु अन्हो की नसल आगे नहीं चली जबकि कुछ के मुताबिक़ आप रज़ियल्लाहु अन्हो के बेटे का नाम अब्दुल्लाह बिन सलीस था जिसने आपसे एक रिवायत वर्णन की है। एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ हज़रत सलीस की एक बेटी थी जिसका नाम सुबीआ था जो हज़रत सुख़ेला बिंत सिम्मा रज़ियल्लाहु के बतन से थी। ओसोदुल गाबा के संकलनकर्ता लिखते हैं कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो की औलाद की नसल आगे चली।

अब्दुल्लाह बिन सलीस बिन क़ैस अपने पिता हज़रत सलीस बिन क़ैस रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत करते हैं कि अंसार में से एक शख़्स का बाग़ था जिसमें किसी दूसरे अंसारी शख़्स के खजूर के दरख़्त थे और वह शख़्स उस बाग़ में सुबह-ओ-शाम आया करता था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस को हुक्म दिया कि इस के दरख़्तों में से जो बाग़ की दीवार के साथ लगे हुए हैं उनकी खजूरें उस अंसारी को दिया करें जिसका बाग़ था।

(اُسد الغابة فی معرفة الصحابة،جلد 2،صفحه 538،سَلِیْط بن قیس، دار الکتب العلمیة بیروت لبنان)(الطبقات الکبریٰ لابن سعد،جلد 3، صفحه 388،سَلِیْط بن قیس،دار الکتب العلمیة بیروت لبنان،1990ء)

फिर वर्णन है हज़रत मुजज़्ज़र बिन ज़याद रज़ियल्लाहु अन्हो का। मूसा बिन उक्बा ने वर्णन किया है कि लोगों का ख़्याल है कि अबू यसर ने अबू बख़तरी को क़तल किया और बहुत से लोगों ने कहा है कि मुज़्ज़र ने उसे क़तल किया था। हज़रत मुज़्ज़र रज़ियल्लाहु अन्हो ने जाहिलियत में सोवेद बिन सामित को क़तल कर दिया था और इस क़तल ने जंग बुआस का शोला भड़काया था। बाद में हज़रत मुज़्ज़र रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत हारिस बिन सुवैद बिन सामित रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस्लाम क़बूल कर लिया लेकिन हारिस बिन सुवैद अवसर की तलाश में रहे कि अपने वालिद के बदला में उन्हें क़तल करें। ग़ज़व-ए-अहद

में जब क़ुरैश ने मुड़ कर मुस्लमानों पर हमला किया तो हारिस बिन सुवैद ने पीछे से उनकी गर्दन पर वार कर के उन्हें शहीद कर दिया। ग़ज़व-ए-हमरा अल्असद से वापसी पर हज़रत जिबराईल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और आपको बताया कि हारिस बिन सुवैद ने मुजज़्ज़र बिन ज़ियाद को धोखे से क़तल कर दिया है और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हुक्म दिया कि आप हारिस बिन सुवैद को मुज़्ज़र बिन ज़ियाद के बदले में क़तल करें। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऐसे दिन तशरीफ़ ले गए जब क़बा में सख़्त गर्मी थी। हज़रत उवैम बिन सादा रज़ियल्लाहु अन्हो ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद पर मस्जिद क़बा के दरवाज़े पर हारिस बिन सोवेद को क़तल किया था। तबक़ात अलकुबरा की ये रिवायत है ग़ालिबन।

(الطبقات الکبریٰ لابن سعد، الجزء الثالث، صفحہ 283، المُجَذَّر بن زیاد، دار احیاء التراث بیروت 1996ء)(الاصابہ فی تمییز الصحابہ، الجزء الخامس، صفحہ 572-573، المُجَذَّر بن زیاد، دار الکتب العلمیۃ بیروت 2005ء)(امتاع الاسماع، جلد 10، صفحہ 10، فصل فی ذکر من کان یقیم الحدود بین یدی رسول اللہ، دار الکتب العلمیۃ بیروت 1999ء)

फिर हज़रत रफ़ाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हो अह बिन राफे बिन मालिक बिन अजलान रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन है। लिखा है कि हज़रत रफ़ाफ़ा बिन राफे रज़ियल्लाहु अन्हो के क़बूल-ए-इस्लाम का वाक़िया इस तरह वर्णन हुआ है कि मुआज़ बिन रफ़ाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हो अपने पिता से रिवायत करते हैं कि वह हज़रत रफ़ाफ़ा बिन राफे और उनके ख़ालाज़ाद भाई हज़रत मआज़ बिन अफ़रा रज़ियल्लाहु अन्हो निकले और मक्का मुकर्रमा पहुंचे जब दोनों सनीया पहाड़ी से नीचे उतरे तो उन्होंने एक शख़्स को दरख़्त के नीचे बैठे देखा। रावी के मुताबिक़ यह वाक़िया छः अंसारियों के निकलने से पहले का है अर्थात बैअत-ए-उक़बा औला से पहले का वाक़िया है। कहते हैं कि जब हमने, उस शख़्स को देखा तो वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे। तो हमने कहा कि उस शख़्स के पास चलते हैं और अपना सामान उसके पास रखवा देते हैं यहां तक कि बैतुल्लाह का तवाफ़ कर आएं। कहते हैं कि हमने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जाहिलियत के रिवाज के मुताबिक़ सलाम किया मगर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इस्लामी तरीक़ के मुताबिक़ सलाम का जवाब दिया और हम कहते हैं कि हम नबी के बारे में सन तो चुके थे कि मक्का में किसी ने दावा किया है मगर हमने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को न पहचाना। हमने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा कि आप कौन हैं? आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कहा कि नीचे उतर आओ। अतः हम नीचे उतर आए और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से पूछा कि वह शख़्स कहाँ है जो नबुव्वत का दावेदार है और वह कहता है जो भी वह कहता है अर्थात जो भी इस का दावा है वह अपने दावा के मुताल्लिक़ कहता है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह में ही हूँ। फिर कहते हैं मैंने कहा कि मुझे इस्लाम के बारे में बताएं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें इस्लाम के बारे में बताया और पूछा कि आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों को किस ने पैदा किया है? हमने कहा उन्हें अल्लाह तआला ने पैदा किया है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि तुम्हें किस ने पैदा किया है? हमने कहा कि अल्लाह तआला ने। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा यह बुत किस ने पैदा किए हैं जिनकी तुम इबादत करते हो? हमने कहा ये हमने ख़ुद बनाए हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा फिर पैदा करने वाला इबादत का ज़्यादा हक़दार है या वे जिनको पैदा किया गया है। फिर तो तुम ज़्यादा हक़दार हो कि तुम्हारी इबादत की जाए क्योंकि तुम बुतों के पैदा करने वाले हो और फिर आपने फ़रमाया कि मैं अल्लाह की इबादत और इस की गवाही की तरफ़ बुलाता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और यह कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ और आपस में सिला रहमी करने और दुश्मनी को छोड़ देने की तरफ़ बुलाता हूँ जो लोगों के ज़ुलम की वजह से हो। हमने कहा कि नहीं अल्लाह की क़सम! जिस चीज़ की तरफ़ आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बुलाते हैं अगर झूठी हुई तो भी यह उम्दा बातें हैं और अहसन अख़लाक़ हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हमारी सवारी को सम्भालें यहां तक कि हम तवाफ़ कर आएं। मुआज़ बिन अफ़रान आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ही रहे।

रफ़ाफ़ा बिन रफेअ कहते हैं अतः मैं बैतुल्लाह का तवाफ़ करने गया। मैंने सात तीर निकाले और एक तीर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए मुक़र्रर कर लिया जो उनका तरीक़ा था। दिल की तसल्ली के लिए ये तीरों से शुगून लिया करते थे। कहते हैं फिर बैतुल्लाह की तरफ़ मुतवज्जा हुए और दुआ मांगी। हे अल्लाह मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) जिस चीज़ की तरफ़ बुलाते हैं अगर वह हक़ है तो सातों बार इंही का तीर निकाल। मैंने सात बार क़ुरआ डाला और सातों बार आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का ही तीर निकला।

मैं ज़ोर से बोला। اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَنَّ مُحَمَّدًا رَّسُوْلُ اللّٰهِ۔ अतः लोग मेरे पास जमा हो गए और कहने लगे ये शख़्स मजनून है, साबी हो गया है। मैंने कहा बल्कि मोमिन आदमी है। यानी जिसकी तुम बातें कर रहे हो वह तो मजनून है, साबी है लेकिन मैंने कहा नहीं बल्कि मुझे तो लगता है मोमिन आदमी है। फिर मैं मक्का के बालाई इलाक़े में आ गया। अतः जब मुआज़ ने मुझे देखा तो कहा रफ़ाफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हो ऐसे नूरानी चेहरे के साथ आ रहा है जैसा कि जाते वक़्त न था।

अर्थात कलमा पढ़ने से पहले वे नूरानी चेहरा नहीं था जैसा कि अब है। अतः मैं आया और इस्लाम क़बूल किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें सूरा-ए-यूसुफ़ और اِقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ पढ़ाई। फिर हम वापिस गए।

(المستدرک علی الصحیحین، جلد 4، صفحہ 165-166، کتاب البرّ والصّلہ، حدیث 7241، مطبوعہ دار الکتب العلمیۃ بیروت 2002ء)

हज़रत रफ़ाफह बिन राफे रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि बदर के दिन मेरी आँख में तीर लगा जिसकी वजह से मेरी आँख फूट गई तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरी आँख पर अपना लुआब लगाया और मेरे लिए दुआ की तो मुझे इस से कोई तकलीफ़ न हुई।

(سبل الھدیٰ والرشاد، جلد 4، صفحہ 53، باب ذکر برکۃ اثر ریقہ ویدہ صلی اللہ علیہ وسلم، دار الکتب العلمیۃ بیروت 1993ء)

एक दूसरी रिवायत के मुताबिक़ जंग-ए-बदर के दिन तीर हज़रत रफ़ाफ़ा बिन राफे रज़ियल्लाहु अन्हो को नहीं बल्कि उनके वालिद राफे बिन मालिक की आँख में लगा था।

(المستدرک علی الصحیحین، کتاب البرّ والصّلہ، صفحہ 1876، حدیث نمبر 5024، مکتبہ نزار مصطفی البار 2000ء) बहरहाल अल्लाह बेहतर जानता है लेकिन नतीजा बहरहाल वही है कि तकलीफ़ दूर हुई।

हज़रत रफ़ाफ़ा बिन राफे रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक दिन मस्जिद में बैठे हुए थे हम भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ थे। इसी दौरान एक शख़्स आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आया जो बदवी लग रहा था। उसने आकर नमाज़ पढ़ी और बहुत हल्की पढ़ी। फिर मुड़ा और नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सलाम किया तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम पर भी सलाम हो।

वापस जाओ फिर से नमाज़ पढ़ो क्योंकि तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी। वह फिर गया और नमाज़ पढ़ी। फिर वह आया और आकर उसने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सलाम किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फिर फ़रमाया तुम पर भी सलामती हो और फ़रमाया कि वापस जाओ फिर से नमाज़ पढ़ो क्योंकि तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी। इस तरह उसने दो बार या तीन बार किया। हर बार वह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आकर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को सलाम करता और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फ़रमाते तुम पर भी सलाम हो। वापस जाओ फिर से नमाज़ पढ़ो क्योंकि तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी। तो लोग डरे और उन पर यह बात गिरां गुज़री कि जिसने हल्की नमाज़ पढ़ी है उसने नमाज़ ही नहीं पढ़ी। वहां जो लोग, सहाबा इर्द-गिर्द बैठे हुए थे उनको बड़ा ख़ौफ़ महसूस हुआ कि इस का मतलब है कि हल्की नमाज़ें तो फिर नमाज़ ही नहीं है।

हमें भी इस लिहाज़ से अपना जायज़ा लेना चाहिए।

आख़िर उस आदमी ने अर्ज़ किया कि हमें पढ़ कर दिखा दें और मुझे सिखा दें। मैं इन्सान ही तो हूँ मैं सही भी करता हूँ और मुझ से ग़लती भी हो जाती है तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया ठीक है जब तुम नमाज़ के लिए खड़े होने का इरादा करो तो पहले वुज़ू करो जैसे अल्लाह ने तुम्हें वुज़ू करने का हुक्म दिया है। फिर अगर तुम्हें कुछ क़ुरआन याद हो तो उसे पढ़ो अन्यथा اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، اَللّٰهُ اَكْبَر اور لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰه फिर रुकु में जाओ और ख़ूब इतमेनान

से रुकु करो। इस के बाद बिल्कुल सीधे खड़े हो जाओ। फिर सजदा करो और ख़ूब एतेदाल से सजदा करो। फिर बैठो और ख़ूब इतमेनान से बैठो फिर उठो। जब तुमने ऐसा कर लिया तो तुम्हारी नमाज़ पूरी हो गई और अगर तुमने इस में कुछ कमी की तो तुमने उतनी ही अपनी नमाज़ में से कमी की।

(سنن الترمذی، کتاب الصلوٰۃ،باب ما جاء فی وصف الصلوٰۃ، حدیث: 302)

हज़रत रफ़ाफ़ा बिन राफे रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि वह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास बैठे हुए थे तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि किसी की नमाज़ मुकम्मल नहीं होती यहां तक कि वह पूरी तरह वुज़ू करे जैसे अल्लाह तआला ने उस को हुक्म दिया है। अपने चेहरे और दोनों हाथों को कोहनियों तक धोए और अपने सिर का मस्ह करे और अपने दोनों पांव टख़नों तक धोए। **(سنن ابن ماجه، کتاب الطهارۃ،باب ما جاء فی الوضوء، حدیث: 460)**

एक और रिवायत में हज़रत रफ़ाफ़ा बिन राफे रज़ियल्लाहु अन्हो से इस वाक़िया की रिवायत है कि उन्होंने कहा कि जब तुम खड़े हो और तुमने क़िबला की तरफ़ रुख किया तो अल्लाहु-अकबर कहो और सूरः फ़ातेहा पढ़ो और इस के साथ जितना क़ुरआन अल्लाह चाहे, जितना तुम्हें याद है या जो पढ़ना चाहते हो तुम पढ़ो जब तुम रूकू करो तो अपनी दोनों हथेलियाँ अपने दोनों घुटनों पर रखो और अपनी कमर सीधी रखो और उन्होंने कहा जब तुम सजदा करो तो इतमेनान से सजदा करो और जब तुम सिर उठाओ तो अपने बाएं रान पर बैठो।

(سنن ابی داؤد، کتاب الصلوٰۃ،باب صلوٰۃ من لا یقیم صلبه فی الرکوع و السجود، حدیث نمبر 859)

फिर वर्णन है हज़रत अबू उसैद मालिक बिन रबीह का। उस्मान बिन अबै-दुल्लाह से मर्वी है कि मैंने अबू उसेद को देखा वे अपनी दाढ़ी ज़र्द रंगते थे।

(अल् तबकातुल कुबरा, भाग 3 पृष्ठ 421 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत 2017 ई.)

इब्ने इसहाक़ कहते हैं कि अबू उसैद मालिक बिन रबीया ग़ज़वा बदर में शरीक थे जब उनकी अख़ीर उम्र में बीनाई चली गई तो उन्होंने कहा कि अगर आज मैं बदर के मुक़ाम पर होता और मेरी बीनाई भी ठीक होती तो मैं तुमको वह घाटी दिखाता जहां से फ़रिश्ते निकले थे। मुझे इस में ज़रा भी शक और वहम नहीं होगा।

(السیرۃ النبویۃ لابن هشام، صفحه 431، دار الکتب العلمیۃ بیروت، 2001ء)

अबू उसैद मालिक बिन रबीया सादी से रिवायत है। वह कहते हैं कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास बैठे हुए थे कि इसी दौरान बनू सलमा का एक शख़्स आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास आया और उसने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मेरे माँ बाप के मर जाने के बाद भी उनके साथ हुस्न-ए-सुलूक की कोई सूरत है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ। इन के लिए दुआ करना और उन के लिए इस्तग़फ़ार करना। उनके बाद उनके वादों को पूरा करना और जो इन दोनों के रिश्तेदार हैं उनसे सिला रहमी करना, उन्हें जोड़े रखना, उनके दोस्तों की इज़्ज़त करना।

(سنن ابو داؤد، کتاب الادب،باب فی بر الوالدین، حدیث 5142) इस तरह उनको भी सवाब पहुंचता रहेगा। उनकी रूह को भी सवाब पहुंचता रहेगा। उनकी मग़फ़िरत के सामान होते रहेंगे।

मालिक बन रबिया से मर्वी है कि मैं ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वस-ल्लम को कहते सुना हे अल्लाह! सिर मुंडवाने वालों की मग़फ़िरत फ़र्मा। तो एक शख़्स ने कहा और बाल कतरवाने वालों की? तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने तीसरी या चौथी मर्तबा फ़रमाया और बाल कतरवाने वालों की भी। मैं भी उस रोज़ सिर मुंडाए हुए था मुझे इस से जो ख़ुशी हुई वह मुझे सुर्ख़ ऊंट या बहुत ज़्यादा माल मिलने पर भी न होती।

(अल् तबकातुल कूबरा, भाग 2 पृष्ठ 79-80 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

उस्मान बिन अर्कम अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बदर के दिन फ़रमाया तुम्हारे पास जो माल-ए-ग़नी-मत है उसे छोड़ दो तो हज़रत अबू उसैद सादी रज़ियल्लाहु अन्हो ने आयज़ुल मर्ज़बाँ की तलवार रख दी तो हज़रत अकरम रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे उठा लिया। और कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ये मुझे दे दें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वह तलवार उनको अता कर दी।

(معرفۃ الصحابۃ لابی نعیم، جلد 1، صفحه 295، حدیث 1022، دار الکتب العلمیۃ بیروت 2002ء)

फिर हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्दुल असद रज़ियल्लाहु अन्हो का वर्णन है। एक रिवायत में है कि मुहम्मद बिन उम्मार कहते हैं कि मक्का से हिज्रत कर के मदीना आने वालों में सबसे पहले हमारे पास हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुल असद रज़ियल्लाहु अन्हो तशरीफ़ लाए। वह दस मुहर्रम को मदीना आए जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बारह रबीउल अव्वल को मदीना में तशरीफ़ लाए। वह मुहाजेरीन जो सबसे पहले आए और बनू अम्र बिन औफ़ में ठहरे और जो मुहाजेरीन आख़िर पर आए उनके दरमयान दो महीनों का अंतर है।

हज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि हज़रत अबू सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हो ने जब मदीना हिज्रत की तो क़बा में हज़रत मुबश्शिर बिन अब्दुल मुनज़र रज़ियल्लाहु अन्हो के हाँ ठहरे। हिज्रत की तो वह क़बा में हज़रत मुबश्शिर बिन अब्दुल मुनज़र रज़ियल्लाहु अन्हो के हाँ ठहरे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुल असद रज़िय-ल्लाहु अन्हो और हज़रत सअद बिन ख़ैसमा के दरमयान भाईचारा क़ायम फ़रमाई।

(अल् तबकातुल कुबरा ले-इब्ने साद, भाग 3 पृष्ठ 181 **ومن بنی مخزوم: ابو سَلَمه بن عبد الاَسَد دار الکتب العلمیۃ بیروت**)

जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़बीला बनू तै के एक शख़्स ने जो कि अपनी भतीजी से मिलने के लिए मदीना आया था यह ख़बर दी कि ख़ूवेलद के बेटे तलहा और सलमा अपनी क़ौम और अपने हलीफ़ों में घूम रहे हैं और अपनी क़ौम और उन लोगों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ भड़का कर जंग पर आमादा कर रहे हैं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू सलमा यानी हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबुल असद को बुला कर बनू असद की सरकूबी के लिए डेढ़ सौ मुहाजिरीन और अंसार की सरकर्दगी में भेजा और उनको लीवा यानी एक पर्चम तैयार करके दिया और जिस शख़्स ने बनू असद के मुताल्लिक़ यह सूचना दी थी उस को बतौर रहबर साथ भेजा। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू सल्मा रज़िय-ल्लाहु अन्हो को हुक्म देते हुए फ़रमाया कि तुम आगे बढ़ते रहो यहां तक कि बनू असद के इलाक़े में जा कर पड़ाव डालो और इस से पहले कि वे अपने लश्कर के साथ तुम्हारा सामना करें तुम उन पर हमला कर दो। इसलिए इस हुक्म पर हज़रत अबू सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हो निहायत तेज़ी के साथ रात-दिन सफ़र करते हुए आम रास्तों से हट कर चले ताकि बनू असद को उनकी पेशक़दमी की ख़बर होने से पहले वह उनके सिर पर अचानक पहुंच जाएं। आख़िर चलते चलते वे बनू असद के एक चश्मे पर पहुंच गए और उन्होंने मवेशियों के बाड़े पर हमला कर दिया और उनके तीन चरवाहों को पकड़ लिया। बाक़ी तमाम लोग जान बचा कर भागने में कामयाब हो गए। हज़रत अबू सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपने दस्ते को तीन हिस्सों में तक़सीम किया और एक हिस्सा अपने पास रखकर बाक़ी दो को इधर उधर रवाना कर दिया। ये लोग कुछ और ऊंट और बकरियां पकड़ लाए मगर किसी आदमी को न पकड़ सके। इसके बाद हज़रत अबू सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हो वापस मदीना लौट आए। ये सीरत हलबिया का हवाला है।

(السیرۃ الحلبیه، جزء ثالث، صفحه 231، باب سرایاه و بعوثه، دار الکتب العلمیۃ بیروت 2002ء)

अम्र बिन अबू सलमा कहते हैं कि हज़रत अबू सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हो ग़ज़वा बदर और अहद में शरीक हुए और अबू उसाम जशमी ने ग़ज़वा अहद में उन्हें ज़ख़्मी किया। उसने हज़रत अबू सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हो के बाज़ू पर बरछी से वार किया। हज़रत अबू सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हो एक माह तक इस ज़ख़्म का ईलाज करते रहे जो बज़ाहिर अच्छा भी हो गया। ज़ख़्म-ए-मुंदमिल हो गया जिसकी ख़राबी को कोई न पहचानता था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हिज्रत के पैंतिसवें महीने मुहर्रम में उन्हें एक सरिया कुतुन बनू असद की तरफ़ भेजा। कुतुन के विषय में कहते हैं यह अनीरा (नजद) और ख़ैबर के वस्त में एक पहाड़ी है जिसके शुमाल में बनू असद बिन ख़ुज़ैमा आबाद थे। बहरहाल वे दस से ज़ायद रातें मदीना से बाहर रहने के बाद वापस लौटे तो उनका ज़ख़्म ख़राब हो गया और वे बीमार हो गए और तीन जमादियुल आखिर

चार हिज्री को वफ़ात गए।

(अल् तबकातुल कुबरा ले-इब्ने साद, भाग 3 पृष्ठ 182 ابو سَلَمه بن عبد الاَسَد ओसोदुल गाबा दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)(फ़र्हंग सीरत, पृष्ठ 237 ज़व्वार अकैडमी कराची 2003 ई.)

अबू कलाबा से मर्वी है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अबू सलमा बिन अब्दुल असद रज़ियल्लाहु अन्हो के पास अयादत के लिए तशरीफ़ लाए। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तशरीफ़ आवरी के साथ ही उनकी रूह परवाज़ गई।

रावी कहते हैं कि इस पर वहां औरतों ने कुछ कहा तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया रुक जाओ। अपनी जानों के लिए ख़ैर के सिवा और कोई दुआ न किया करो क्योंकि फ़रिश्ते मय्यत के पास या फ़रमाया मय्यत के अहल के पास हाज़िर होते हैं। वे उनकी दुआ पर आमीन कहते हैं। लिहाज़ा अपने लिए सिवाए ख़ैर के और कोई दुआ न करो। यह रोना पीटना जो है नाँ जिसको हमारे हाँ सयापे करना भी कहते हैं वह नहीं होना चाहिए। फ़रमाया: हे अल्लाह इन के लिए उनकी क़ब्र को कुशादा कर दे और उन के लिए इस में रोशनी कर दे। उनके नूर को बढ़ा दे और उनके गुनाह को माफ़ कर दे। हे अल्लाह उनका दर्जा हिदायत याफताह लोगों में बुलंद कर। और उनके पीछे रहने वालों में तू उनका क़ायमक़ाम हो जा। हमें और उनको बख़शा दे। हे रब्बुल आलमीन फिर फ़रमाया जब रूह निकलती है तो नज़र इसके पीछे होती है। क्या तुम उसकी आँखें खुली नहीं देखते।

(الطبقات الکبریٰ لابن سعد، جز 3، صفحه 183، ومن بنی مخزوم :ابو سَلَمه بن عبد الاَسَد دار الکتب العلمیة بیروت)

फिर वर्णन है हज़रत खल्लाद बिन राफे ज़ुरक़ी रज़ियल्लाहु अन्हो का। यह अंसारी थे। हज़रत खल्लाद बिन राफे रज़ियल्लाहु अन्हो का ताल्लुक़ अंसार के क़बीला बनू ख़ज़रज की शाख़ अजलान से था।

(सीरत इब्ने हशाम, पृष्ठ 472 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत मुद्रित 2001 ई.)

उनकी वालिदा का नाम मालिक बिंत उबैय बिन मालिक था। हज़रत खल्लाद रज़ियल्लाहु अन्हो के बेटे का नाम यहया था जो उम्मे राफे बिंत उस्मान बिन खलदा के गर्भ से थे। यही लिखा है कि उनके समस्त बच्चे शुरू में ही वफ़ात पा गए थे।

(الطبقات الکبری، الجزء الثالث، صفحه 447، خَلَّادُ بن رَافِع دار الکتب العلمیة 1990ء)

जैसा कि नमाज़ पढ़ने के बारे में एक रिवायत वर्णन हो चुकी है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दो तीन दफ़ा एक शख़्स को फ़रमाया कि दुबारा पढ़ो। सही बुख़ारी में हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से ये रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मस्जिद में तशरीफ़ लाए। इतने में एक शख़्स आया और उसने नमाज़ पढ़ी। फिर उसने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सलाम किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सलाम का जवाब दिया फ़रमाया : वापस जाओ और नमाज़ पढ़ो और इसी तरह उस को दुबारा लौटा दिया। फिर उस को लौटाया और यही कहा कि वापस जाओ और नमाज़ पढ़ो जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है। फिर उसने कहा कि उस ज़ात क़सम! जिसने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हक़ के साथ मबऊस फ़रमाया है में इस से अच्छी नमाज़ नहीं पढ़ सकता इसलिए आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम मझे सिखाएँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब नमाज़ के लिए खड़े हो तो अल्लाहु-अकबर कहो। फिर क़ुरआन में से जो याद हो पढ़ो यानी सूरा फ़ातेहा के बाद जो मयस्सर है। फिर रुकू करो यहां तक कि रुकू में तुम्हें इतमीनान हो जाए। फिर सिर उठाओ यहां तक कि इतमेनान से खड़े हो जाओ। फिर सजदा करो यहां तक कि तुम्हें सज्दे में इतमीनान हो जाए। फिर सिर उठाओ यहां तक कि इतमेनान से बैठ जाओ। अल-ग़र्ज़ अपनी सारी नमाज़ में इसी तरह करो। (सही बुख़ारी, किताब अज़ान हदीस 757)

अल्लामा इब्ने हिज्र असकलानी रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि वह शख़्स जिसके साथ यह वाक़िया पेश आया वह हज़रत खल्लाद बिन राफे रज़ियल्लाहु अन्हो थे।

(مرقاة المفاتیح شرح مشکاة المصابیح، جز 2، صفحه 458، باب صفة الصلاة، حدیث نمبر 790 دار الکتب العلمیة بیروت 2001ء)

फिर हज़रत अब्बाद बिन बिशर रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन है। ग़ज़वा ख़ंदक़ के अवसर पर भी हज़रत अब्बाद बिन बशर रज़ियल्लाहु अन्हो को भरपूर ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। इसलिए हज़रत उम्मे सल्मा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि मैं ख़ंदक़ में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थी और किसी जगह भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से अलग नहीं हुई। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम स्वयं भी ख़ंदक़ की निगरानी फ़रमाते थे। हम सख़्त सर्दी में थे मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को देख रही थी कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उठे और जिस क़दर अल्लाह ने चाहा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अपने ख़ेमे में नमाज़ पढ़ी। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बाहर निकले और देखा। कुछ देर के लिए नज़र दौड़ाई फिर मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना यह तो मुशरिकों के घुड़सवार हैं जो ख़ंदक़ का चक्कर लगा रहे हैं। उन्हें कौन देखेगा? फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने आवाज़ दी। हे अब्बाद बिन बिशर! हज़रत अब्बाद रज़ियल्लाहु अन्हा ने अर्ज़ की मैं हाज़िर हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा क्या तुम्हारे साथ कोई और भी है? उन्होंने जवाब हाँ मैं अपने चंद साथियों के साथ हूँ। हम आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़ेमे के इर्द-गिर्द हैं। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अपने साथियों के साथ जाओ और ख़ंदक़ का चक्कर लगाओ। ये उन मुशरिकीन के घुड़सवारों में से कुछ घुड़सवार हैं जो तुम पर चक्कर लगा रहे हैं और वे ख़ाहिश रखते हैं कि तुम्हारी ग़फ़लत में अचानक तुम पर हमला कर दें। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुआ की कि हे अल्लाह हमसे उनके शर को दूर कर दे और उनके ख़िलाफ़ हमारी मदद फ़र्मा और उनको मग़लूब कर दे। तेरे इलावा कोई उन्हें मग़लूब नहीं कर सकता

फिर हज़रत अब्बाद बिन बिशर अपने साथियों के साथ निकले और देखा कि अबूसुफ़ियान मुशरेकीन के चंद घुड़सवारों के साथ था और वह ख़ंदक़ की तंग जगह का चक्कर लगा रहा था और मुस्लमान जो इस किनारे पर वहां बैठे थे, उनके बारे में आगाह हो चुके थे। उन्होंने, मुस्लमानों ने उन पर पत्थर और तीर बरसाए। फिर हम भी उनके साथ रुक गए और हमने भी उन पर तीर-अंदाज़ी की यहां तक कि हमने इन मुशरिकीन को तीर-अंदाज़ी करते हुए अपनी जगह से हटने पर मजबूर कर दिया और वे अपने ठिकानों की तरफ़ लौट गए और मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ आया और मैं ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को नमाज़ की हालत में पाया। फिर मैं ने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस वाक़िया के बारे में आगाह किया। हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सो गए यहां तक कि मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सांस की आवाज़ सुनी और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उस वक़्त तक न उठे यहां तक कि मैं ने हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो को सुबह की अज़ान देते हुए सुना और फ़ज्र की सफ़ेदी नज़र आ गई। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाहर तशरीफ़ लाए और मुस्लमानों को नमाज़ पढ़ाई। हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती थीं कि अल्लाह तआला अब्बाद बिन बिशर पर रहम फ़रमाए वह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में से सबसे बढ़कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ेमे के साथ चिमटे रहे और हमेशा उस की हिफ़ाज़त करते रहे।

(کتاب المغازی للواقدی، جزء 1، صفحه 396-397، غزوة الخندق، دار الکتب العلمیة بیروت مطبوعه 2013ء)

"हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाया करती थीं कि अंसार में से तीन अश्ख़ास अपनी अफ़ज़लीयत में जवाब नहीं रखते थे यानी "हज़रत उसैद बिन खूजैर" "हज़रत साद बिन माज" और "हज़रत अब्बाद बिन बिशर।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अज़ हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए, पृष्ठ : 229)

तहवील-ए-क़िबला के संबंध में रिवायत है। इस में हज़रत अब्बाद बिन बशर का नाम भी आता है। इसलिए हज़रत तुवेला रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि हम बनू हारिसा में ज़ुहर या अस्र की नमाज़ पढ़ रहे थे और दो रकात बै-तुल-मुक़द्दस की तरफ़ रख करके पढ़ी थीं कि एक आदमी आया और उसने आकर हमें बताया कि क़िबला मस्जिद हराम की तरफ़ फेर दिया गया है। वह वर्णन करती हैं कि फिर हमने जगह तबदील कर ली और मर्द औरतों की जगह की तरफ़ मुंतक़िल हो गए और औरतें मर्दों की जगह की तरफ़। एक रिवायत के मुताबिक़ इस सूचना देने वाले आदमी का नाम हज़रत अब्बाद बिन बिशर बिन

कैनती था जो कि क़बीला बनू अब्दुल अशहल से ताल्लुक़ रखते थे जबकि एक दूसरे क़ौल के मुताबिक़ ये शख़्स अब्बाद बिन बिशर बिन कैनती थे जो बनू अब्दुल अशहल से ताल्लुक़ रखते थे

(ओसोदुल ग़ाब फ़ी मारेफ़सहाबा, भाग 3 पृष्ठ 148-149 दारुल कुतुब इल्मिया बेरूत)

(سیر اعلام النبلاء لامام الذھبی ،جزء 1، صفحہ 339، عَبَّاد بن بشر، الرسالۃ العالمیۃ الطبعۃ الثانیۃ 2014ء)

सुलह हुदैबिया के अवसर पर जब क़ुरैश-ए-मक्का की तरफ़ से सुहेल बिन अम्र नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ बातचीत की ग़रज़ से आया तो उस वक़्त भी हज़रत अब्बाद बिन बशर आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास लोहे का कवच पहने खड़े थे और आपके साथ एक और सहाबी हज़रत सलमा बिन असलम भी थे। दौरान-ए-गुफ़्तगु जब सुहेल की आवाज़ बुलंद हुई तो हज़रत अब्बाद बिन बिशर ने उसे कहा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास अपनी आवाज़ रखो।

(سبل الھدیٰ والرشاد، جزء 5، صفحہ 52، باب ذکر الھدنۃ و کیف الصلح یوم الحدیبیۃ، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

हज़रत अब्बाद बिन बशर हर ग़ज़वे के अवसर पर पेश पेश रहे इसलिए जब उयैना बिन हिस्न् फ़ज़ारी, बनू ग़तफान के चंद सवारों के साथ ग़ाबा पर हमला--आवर हुआ जहां नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दूधेल ऊंटनियां चरा करती थीं तो उन्होंने ऊंटनियों की निगरानियों पर मुतय्यन आदमी को क़तल कर दिया और इस की बीवी और आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ऊंटनियों को साथ ले गए। जब मदीना में यह ख़बर पहुंची तो घुड़सवार नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होने लगे। रिवायत में वर्णन है कि अंसार में से हज़रत मिकदाद बिन असवद रज़ियल्लाहु अन्हो के बाद सबसे पहले हज़रत अब्बाद बिन बिशर रज़ियल्लाहु अन्हो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंचे।

(السیرۃ النبویۃ لابن ھشام، جزء 3-4، صفحہ 174-175، غزوۃ ذی قرد، دار الکتاب العربی بیروت مطبوعہ 2008ء)

यह मुहिम ग़ज़वा ज़ी क़रद के नाम से प्रसिद्ध है। इस की तफ़सील सही बुख़ारी में भी आई है। यज़ीद बिन अबी उबैद से रिवायत है कि उन्होंने कहा मैं ने हज़रत सलमा बिन अकवा रज़ियल्लाहु अन्हो से सुना वह कहते थे कि मैं नमाज़ फ़जर की अज़ान से पहले मदीना से निकल कर ग़ाबा की तरफ़ गया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दूधेल ऊंटनियां ज़ी क़रद मुक़ाम पर चर रही थीं। कहते थे कि अबदुर्रहमान बिन औफ़ का एक लड़का मुझे रस्ते में मिला। कहने लगा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ऊंटनियां ले गए हैं। मैंने कहा कौन ले गए हैं? उसने कहा ग़तफ़ान के लोग। कहते थे कि यह सुनते ही मैंने सबाहा की आवाज़ तीन बार बुलंद की और उनको पहुंचा दी जो मदीना के दो पथरीले मैदानों में थे। फिर अपने सामने बेतहाशा दौड़ पड़ा यहां तक कि इन लुटेरों को जा लिया और वह जानवरों को पानी पिलाने लगे थे। मैंने उन्हें तीरों का निशाना बनाया और मैं अच्छा तीर-अंदाज़ था और यह पंक्तियाँ कहता जाता था। मैं उक़्वा का बेटा हूँ आज का दिन वह है जिसमें मालूम हो जाएगा कि दूध पिलाने वालियों ने किसे दूध पिलाया है और मैं गरजते हुए यह रजज़ ये शेअर पढ़ता था यहां तक कि उनसे तमाम दूधेल ऊंटनियां छुड़ा लें और उनसे तीस चादरें भी छीन लीं। कहते थे कि मैं इसी हाल में था कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दूसरे लोगों समेत आ पहुंचे। मैं ने कहा अल्लाह! मैंने उन लोगों को पानी नहीं पीने दिया और वे प्यासे थे। आप उनकी तरफ़ उस वक़्त दस्ता भेजिए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : अक़्वा के बेटे! तुमने उन पर क़ाबू पा लिया है इसलिए नरमी करो।

हज़रत उक़्वा रज़ियल्लाहु अन्हो कहते थे फिर हम लौट आए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे अपने पीछे अपनी ऊंटनी पर बिठा लिया और हम इसी हालत में मदीना में दाख़िल हुए।

(सही बुख़ारी, किताब मग़ाज़ी, غَزْوَةُ ذَاتِ الْقَرَدِ, रिवायत नंबर : 4194)

फिर वर्णन है हज़रत हातिब बिन अबी बलता रज़ियल्लाहु अन्हो। उनकी वफ़ात तीस हिज्री में पैंसठ साल किसी उम्र में मदीना में हुई। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो ने आपकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई।

(अल् तबकातुल कुबरा ले-इब्ने साद, भाग 3 पृष्ठ 84 ومن حلفاء بنی اسد, दारुल कुतुब इल्मिया 1990 ई.)

उनके बारे में मज़ीद लिखा है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी आपको मुक़ौक़िस के पास मिस्र भेजा और एक मुआहिदा तर्तीब दिया जो हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हो के हमला मिस्र तक तरफ़ैन के दरम-यान क़ायम रहा।

(الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، جلد 1، صفحہ 314، حَاطِب بن اَبِی بَلْتَعہ اللخمی، دار الجیل بیروت 1992ء)

हज़रत हातिब रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ूबसूरत जिस्म के मालिक थे। हल्की दाढ़ी थी। गर्दन झुकी हुई थी। छोटे कद की तरफ़ माइल और मोटी उंगलियों वाले थे। याक़ूब बिन उत्बा् से मर्वी है कि हज़रत हातिब बिन अबी बलता रज़ियल्ला-हु अन्हो अपनी वफ़ात के दिन चार हज़ार दीनार और दरहम छोड़े। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ग़ल्ला वग़ैरा के ताजिर थे और आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपना तरका मदीना में छोड़ा।

(अल् तबकातुल कुबरा, लेइब्ने साद ,बाग 3 पृष्ठ 85 ومن حلفاء بنی اَسَد दारुल कुतुब इलमिया 1990 ई.)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि एक मर्तबा हातिब का ग़ुलाम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आप रज़ियल्लाहु अन्हो की शिकायत लेकर आया। ग़ुलाम ने कहा हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो वसल्लम! हातिब ज़रूर जहन्नुम में दाख़िल होगा। इस पर रसूलुल्लाह सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तू ने झूठ बोला। वे इस में हरगिज़ दाख़िल नहीं होगा क्योंकि वह ग़ज़ व-ए-बदर और सुलह हुदैबिया में शामिल हुआ था। (सुंन तिरमिज़ी,अबवाब मनाकिब, बाब فیمن سب أصحاب नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हदीस नंबर 3864)

हज़रत सईद बिन मसी्यब रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत हातिब बिन अबी बलता के पास से गुज़रे वह बाज़ार में किशमिश बेच रहे थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा या तो अपनी क़ीमत ज़्यादा करें या फिर हमारे बाज़ार से चले जाएं। मज़ीद लिखा है कि हज़रत इमाम शाफ़ी से रिवायत है कि क़ासिम बिन मुहम्मद कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ईद-गाह के बाज़ार में हज़रत हातिब रज़ियल्लाहु अन्होके पास से गुज़रे। उनके सामने दो टोकरियां किशमिश की भरी पड़ी थीं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनसे उन की कीमत पूछी तो उन्होंने कहा दो मुद एक दिरहम में दे रहा हूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनसे कहा कि मुझे तायफ से आने वाले क़ाफ़िले के बारे में बताया गया है कि वह आप रज़ि-यल्लाहु अन्हो के नर्ख़ का एतबार करते हैं। या तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो नरख़ ज़्यादा करें या फिर घर में बैठ कर जैसे चाहें बेचें। इसलिए जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो घर आए और सोच विचार किया तो फिर हज़रत हातिब रज़ियल्लाहु अन्हो के घर उनसे मिलने गए और उनसे कहा जो कुछ मैं ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा था वह मेरी तरफ़ से कोई ज़बरदस्ती नहीं है और न मेरी तरफ़ से वह फ़ैसला था। मैंने ये बात सिर्फ शहरियों की भलाई के लिए की थी। आप रज़ियल्लाहु अन्हो जहां चाहें बेचें और जितने में चाहें बेचें।

(السنن الکبری للبیہقی، جزء 6، حدیث 11146، جماع ابواب السلم، باب التسعیر، صفحہ 48، دار الکتب العلمیۃ 2003ء)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इस बारे में फ़रमाते हैं कि "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना से मुदीन-ए-मुनव्वर में क़ीमतों पर इस्लामी हुकूमत तसर्रुफ़ रखती थी। इसलिए हदीसों में आता है हज़रत उम्र रज़ियल्लाहु अन्हो एक दफ़ा मदीना के बाज़ार में फिर रहे थे कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने देखा एक शख़्स हातिब बिन अबी बलता मुसल्ला नामी बाज़ार में दो बोरे सूखे अंगूरों के रखे बैठे थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे भाव दरयाफ़त किया तो उन्होंने एक दिरहम के दो मुद बताए। यह भाव बाज़ार के आम भाव से सस्ता था। इस पर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनको हुक्म दिया कि अपने घर जाकर फ़रोख़त करें मगर बाज़ार में वह इस क़दर कम कीमत पर फ़रोख़त नहीं करने देंगे क्योंकि इस से बाज़ार का भाव ख़राब होता है और लोगों को बाज़ार वालों पर बदज़नी पैदा है। "हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "फुक़हा-ए-ने इस पर बड़ी बहसें की हैं। कुछ ने ऐसी रवायात भी नक़ल की हैं कि बाद में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने इस ख़्याल से रुजू कर लिया था मगर साधारणतः फुक़हा ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की राय को एक काबिल-ए-अमल असल के तौर पर तस्लीम किया है और उन्होंने लिखा है कि इस्लामी हुकूमत का यह फ़र्ज़ है कि वह रेट मुक़र्रर करे वर्ना

क़ौम के अख़लाक़ और दियानत में फ़र्क़ पड़ जाएगा मगर यह अमर याद रखना चाहिए कि इस जगह इन्ही अश्या का वर्णन है जो मंडी में लाई जाएं। जो इश्या यमंडी में नहीं लाई जातीं और इन्फ़िरादी हैसियत रखती हैं उनका यहां वर्णन नहीं। अतः जो चीज़ें मंडी में लाई जाती हैं और फ़रोख़्त की जाती हैं उन के मुताल्लिक़ इस्लाम का यह वाज़िह हुक्म है कि एक रेट मुक़र्रर होना चाहीए ता कोई दुकानदार क़ीमत में कमी बेशी न करसके। इसलिए कुछ आसार और अहादीस भी फुक़हा ने लिखी हैं जिनसे उस की ताईद होती है।"

(ख़ुतबाते महमूद रज़ियल्लाहु अन्हो, भाग 19 पृष्ठ 307-308 ख़ुतबा 10 जून 1938 ई.)

यहां मुक़ाबला बाज़ी में फिर एक दूसरे को नुक़्सान पहुंचाने की कोशिश करते हैं इसलिए एक रेट हो

ग़ज़व-ए-बनू मुस्तलक़ पाँच हिज्री से वापसी पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नक़ीअ के मुक़ाम से गुज़रे तो वहां वसीअ इलाक़ा और घास देखी और बहुत से कुँवें देखे। अतः आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन कुओं के पानी के मुताल्लिक़ पूछा तो अर्ज़ किया गया कि हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो वसल्लम! जब हम इन कुओं की तारीफ़ करते हैं तो उनका पानी कम हो जाता है और कुँवें बैठ जाते हैं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत हातिब बिन अबी बलता को हुक्म दिया कि वह एक कुँआं खोदें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नक़ी को चरागाह बनाने का हुक्म दिया। हज़रत बिलाल बिन हारिस मुज़नी रज़ियल्लाहु अन्हो को इस पर निगरान मुक़र्रर फ़रमाया। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो वसल्लम! मैं इस ज़मीन में से कितने हिस्सा को चरागाह बनाऊँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया : जब तलूअ-ए फ़ज्र हो जाये तो एक बुलंद आवाज़ शख़्स को खड़ा करो। रात के अंधेरे में तो दूर तक आवाज़ें जाती हैं इसलिए दिन के वक़्त जब दिन चढ़ जाए तो उस वक़्त एक शख़्स को खड़ा करो फिर उसे मुक़म्मल नामी पहाड़ी पर खड़ा कर के जहां तक इस शख़्स की आवाज़ जाए उतने हिस्सा को मुस्लमानों के घोड़ों और ऊंटों की चरागाह बना दो जिसके द्वारा से वह जिहाद कर सकें। अर्थात जिहाद के लिए मुस्लमानों के जो घोड़े और ऊंट हैं वे वहां चरें। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो वसल्लम! मुस्लमानों के चरने वाले जानवरों के बारे में क्या राय है। मुस्लमानों के जो दूसरे जानवर हैं उनके बारे में (क्या राय है?) आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया वह इस में दाख़िल नहीं होंगे सिर्फ जिहादी जो जिहाद के लिए इस्तमाल होने वाले हैं वही उस जगह से चर सकते हैं। बाक़ी अपनी अपनी चरागाहों पर जाएं। हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ किया कि हे अल्लाह के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस कमज़ोर मर्द या कमज़ोर औरत के बारे में आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का क्या ख़्याल है जिसके पास क़लील तादाद में भेड़ बकरियां हों और वे उन्हें मुंतक़िल करने पर क़ुदरत न रखते हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया : उन्हें छोड़ दो और उन्हें चरने दो। जो ग़रीबों का थोड़ा बहुत माल है उसे बेशक चरने दो।

(سبل الھدیٰ و الرشاد، جلد4، صفحہ 352-353، غزوہ بنی
المصطلق، مطبوعہ دار الکتب العلمیۃ لبنان 1993ء)

ये जो एक रिवायत आई है पहले भी वर्णन हो चुकी है कि एक अंसारी था जिसने हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो से हररा की इस नदी के बारे में झगड़ा किया जिससे लोग ख़जूरों को पानी दिया करते थे। अंसारी ने हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा कि पानी बहने दो और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो ने न माना तो वे दोनों नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास झगड़ा लाए। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया ज़ुबैर तुम अपने दरख़्तों को सेराब कर लो। फिर अपने हम-साए के लिए पानी छोड़ दो। अंसारी को ग़ुस्सा आगया और उसने कहा आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने यह फ़ैसला इसलिए किया है कि यह आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की फूफी का बेटा है। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का चेहरा मुतग़य्यर हो गया और फ़रमाया : ज़ुबैर अपने दरख़्तों को पानी दो। फिर पानी को रोके रखो यहां तक कि वे मुंडेरों तक भर आए। हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि अल्लाह की क़सम मैं समझता हूँ कि यह आयत उसी वक़्त नाज़िल हुई थी कि तेरे रब की क़सम वह हरगिज़ हरगिज़ मोमिन नहीं होंगे जब तक वे तुझे इन बातों में हुक्म न मानें जो उनके दरमयान इख़तेलाफ़ी सूरत इख़तेयार करती है। यह बुख़ारी की रिवायत है।

(صحیح البخاری، کتاب المساقاۃ و السیر، باب سکر الانہار، حدیث
نمبر 2360، 2359)

इस हदीस में जिन अंसारी का वर्णन है उनके बारे में तफ़ासीर में इख़तेलाफ़ है। तफ़सीर-ए करतबी में मक्की वन्नुहास के क़ौल के मुताबिक़ लिखा है कि वे अंसारी हज़रत हातिब बिन अबी बलता थे।

(الجامع لاحکام القرآن لقرطبی، جزو6، صفحہ 441،
مؤسسۃ الرسالۃ بیروت 2006ء)

तो यह हैं जिनका मैं ने आज वर्णन करना था। कुछ थोड़े से रह गए हैं वह इंशा अल्लाह आइन्दा कभी वर्णन कर दूँगा।

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार

"अख़बार बदर" 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिन-स्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(संस्थान)

★ ★ ★

सज्दे में अल्लाह तआला से दुआ करो कि अल्लाह तआला हमें अपना क़ुरब अता करे
अल्लाह से कहो जो दौलत मैं तुझ से मांग रहा हूँ वह तुम ही हो, मुझे पैसा नहीं चाहिए, मुझे दुनिया नहीं चाहिए, मुझे तेरा क़ुरब चाहिए।
अल्लाह से यह दुआ करो कि जिस वादे के साथ तुम जमाअत अहमदिया में आए हो अल्लाह तआला इस अह्द को पूरा करने की, निभाने की तौफ़ीक़ दे।
और तुम एक अच्छे मुरब्बी और मुबल्लिग़ बन के निकलो और अपने लोगों में तब्लीग़ करके इस क़ौम को अल्लाह तआला के सामने झुकाने वाले बनाओ

सय्यदना हज़रत अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल् ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर

(भाग-24)

प्रश्न : इस प्रश्न पर कि रोज़े के दौरान यदि किसी महिलाएं के माहवारी के दिन शुरू हो जाएं तो उसे रोज़ा खोल लेना चाहिए या उस रोज़ा को मुकम्मल कर लेना चाहिए। तथा जब ये दिन ख़त्म हों तो सेहरी के बाद पाक साफ़ हो सकते हैं या सेहरी से पहले पाक होना आवश्यक है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 30 अप्रैल 2020 मे इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर: महिलाएं की इस फ़ित्रती हालत को क़ुरआन-ए-करीम ने "أَذًى" अर्थात् कष्ट की हालत क़रार दिया है। और इस्लाम ने इस कैफ़ीयत में महिलाएं को प्रत्येक किस्म की इबादात के बजा लाने से रुख़स्त दी है। इसलिए जिस वक़्त माहवारी के दिन शुरू हो जाएं उसी वक़्त रोज़ा ख़त्म हो जाता है और उन दिनों के पूरी तरह ख़त्म होने पर और मुकम्मल तौर पर पाक होने के बाद ही रोज़े रखे जा सकते हैं। तथा जो रोज़े इन दिनों में (आरंभ और अंत वाले दिन के साथ छूट जाएं,) इन रोज़ों को रमज़ान के बाद किसी वक़्त भी पूरा किया जा सकता है।

प्रश्न : एक मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के नाम अपने पत्र में हज़रत सौबान रज़ियल्लाहु अन्हो से मर्वी एक हदीस कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हारे एक ख़ज़ाना की ख़ातिर तीन व्यक्ति क़िताल करेंगे (और मारे जाऐंगे) तीनों ख़लीफों (हुकमरान) के बेटे होंगे लेकिन वह ख़ज़ाना उनमें से किसी को भी नहीं मिलेगा। फिर पूर्व की जानिब से स्याह झंडे नमूदार होंगे वे तुम्हें ऐसा क़तल करेंगे कि इस से क़बल किसी ने ऐसा क़तल न किया होगा। इस के बाद अपने कुछ और बातें भी वर्णन फ़रमाएं जो मुझे याद नहीं, फिर फ़रमाया जब तुम इन (महदी) को देखो तो उनकी बैअत करो जबकि तुम्हें बर्फ़ पर घुटनों के बल घिसट कर जाना पड़े। क्योंकि वह ख़लीफ़तुल महदी हैं।" दर्ज करके इस के एक हिस्सा की व्याख्या कर के बारे में हुज़ूर की राय दरयाफ़त की। तथा हदीस के एक हिस्सा के बारे में मज़ीद वज़ाहत चाही। हुज़ूर अनवरअय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि 30 मई 2020 मे इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर इरशाद फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : आप ने इस हदीस का हवाला बहर-ए-ज़रख़ार से दर्ज किया है जबकि यह हदीस सहा सित्ता में से सुंन इब्ने माजा किताब फ़ितन बाब ख़ुरूज महदी में भी रिवायत हुई है। हदीस में वर्णन कंज़ और ख़लीफों के बेटों के बारे में आपकी वर्णन करदा व्याख्या एक ज़ौक़ी व्याख्या है।

मेरे ख़्याल में इस में आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उम्मत-ए-मुस्लिमा में आगे ज़माने में नमूदार होने वाले विभिन्न वाक़ियात की ख़बरदी है। जिनमें कुछ वाक़ियात दुनियावी उमूर से सम्बन्ध रखते हैं और कुछ अध्यात्मिक उमूर के सम्बन्ध में हैं। खज़ाने से मुराद जबकि बहुत से उल्मा ने ख़ाना काअबा का ख़ज़ाना मुराद लिया है, परन्तु वे ख़ज़ाना तो बहुत से हुकमरानों के हाथ लगे भी हैं। इसलिए हदीस में मज़कूर ख़ज़ाना से मुराद ख़ाना काअबा का ख़ज़ाना मुराद नहीं हो सकता क्योंकि हदीस मे हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़र्मा रहे हैं कि वह ख़ज़ाना उनमें से किसी को नहीं मिलेगा। इस लिए इस से मुराद वह अध्यात्मिक ख़ज़ाना है जिस की आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने बाद ख़िलाफ़त अला मिनहाज अल् नबूव्वत के इजरा की सूरः में बशारत अता फ़रमाई थी। और चूँकि इस खज़ाने को पाने के लिए क़ुरआन-ए-करीम ने सबसे प्रथम शर्त ईमान और अमल-ए-सालेह क़रार दी है, जो इन दुनियावी हुकमरानों में मफ़क़ूद हो चुकी थी, इसलिए उन्होंने इसके हुसूल के लिए क़िताल अर्थात् जंगें तो बहुत कीं लेकिन किसी के हाथ वह अध्यात्मिक ख़ज़ाना न आया।

इसी लिए इस में आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने खज़ाने के लिए क़िताल करने वालों के लिए केवल "इब्ने ख़लीफ़" के शब्द प्रयोग फ़रमाए हैं। अर्थात् वह ख़लीफ़ा बमानी जांनशीन होंगे लेकिन अल्लाह तआला की तरफ़ से क़ायम करदा ख़लीफ़ा या नुबुव्वत की बिना पर मिलने वाली ख़िलाफ़त के ताबे ख़लीफ़ा नहीं होंगे। जबकि इसी हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस व्यक्ति के लिए जिसे यह ख़िलाफ़त अला मिनहाज-ए-नबूव्वत का अध्यात्मिक ख़ज़ाना मिलना था "ख़लीफ़तुल महदी" के शब्दों प्रयोग फ़रमाए हैं।

इस हदीस में मुसलमानों के क़तल-ओ-ग़ारत का जो वर्णन है, आप ने उस के बारे में अपना ख़्याल ज़ाहिर किया है कि वह महदी के माध्यम से होगा जो मेरे नज़दीक दरुस्त नहीं है। यदि इस से मुराद ज़ाहिरी क़तल ओ ग़ारत और ख़ूँरेज़ी ली जाए तो यह महदी के माध्यम से कदापि नहीं हो सकती बल्कि इस से मुराद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक दूसरी हदीस (वर्णनित मिशकात मसाबीह" मे مُلْكًا عَاضًّا' और مُلْكًا جَبْرِيَّةً के शब्दों में वर्णन भविष्यवाणी के अनुसार, इन प्रत्येक दो अदवार में मुसलमानों की आपस की जंगों में होने वाली ख़ूँरेज़ी और हत्या और खून खराबा है। तथा तेरहवीं सदी में मंगोलों के हाथों होने वाली मुसलमानों की क़तल-ओ-ग़ारत मुराद है।

ख़लीफ़ातुलल्लाह अल् महदी के माध्यम से इस क़तल-ओ-ग़ारत के वक़ूअ पज़ीर न होने की एक दलील यह भी कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आने वाले महदी की एक निशानी "يَضَعُ الْحَرْب" अर्थात् वो जंग-ओ-जदाल और किशत-ओ-ख़ून का ख़ातमा कर देगा। (सही बुख़ारी किताब अंबिया बाब नुज़ूल ईसा) वर्णन फ़रमाई है। अतः यह कैसे हो सकता है कि एक तरफ़ तो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आने वाले महदी को अमन-ओ-शांति का अलमबरदार क़रार दे रहे हों और दूसरी तरफ़ इसी के माध्यम से उम्मत-ए-मुहम्मदिया के लोगों की ऐसी ख़ूँरेज़ी की सूचना दे रहे हों जैसी ख़ूँरेज़ी पहले ज़मानों में कभी किसी ने न की हो?

फिर उस हदीस में रावी का यह वर्णन कि "इस के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुछ और बातें भी फरमाईं जो मुझे याद नहीं।" विशेष तवज्जा का मुतहम्मिल है। और बहुत संभव है कि वे उमूर दज्जाल के ज़हूर के बारे में हों क्योंकि असंख्य ऐसी रिवायात कुतुब अहादीस में मौजूद हैं जिनमें हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दज्जाल के फ़ित्ना को सबसे बड़ा फ़ित्ना क़रार दिया और उसके मुक़ाबले के लिए अपनी उम्मत को मसीह मौऊद की आमद की ख़ुशख़बरी अता फ़रमाई। रावी के अनुसार इन बातों के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम की आमद

का वर्णन फ़रमाया और उनकी बैअत को लाज़िमी क़रार देते हुए ताकीदन फ़रमाया कि यदि तुम्हें बर्फ़ की सिलों से घुटनों के बल घिसट कर भी जाना पड़े तो अवश्य उसकी बैअत करना, क्योंकि वह ख़लीफ़ातुलल्लाह अल् महदी है।

अतः हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस हदीस में तीन अलग अलग ज़मानों का वर्णन फ़रमाया है। एक वह ज़माना जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और ख़िलाफ़त-ए-राशिदा का मुबारक दौर हसब-ए-मंशा इलाही अंत पज़ीर हो जाएगा। और इसके बाद मुसलमान आपस में जंग-ओ-जदाल करेंगे और अपने ही लोगों को तलवार के नीचे करके उनका ख़ून बहाएँगे, उस वक़्त वह अध्यात्मिक खज़ाने से वंचित हो जाऐंगे। दूसरा वह ज़माना जब मुसलमानों के दुनियावी लिहाज़ से भी कमज़ोर हो जाने की वजह से उनके ग़ैर मुस्लिम मुख़ालेफ़ीन उन्हें ख़ूँरेज़ी का निशाना बनाएंगे और फिर तीसरा वह जब आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बशारतों के अनुसार इमाम महदी और मसीह मुहम्मदी की बिअसत होगी और उम्मत-ए-मुहम्मदिया का वह हिस्सा जो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस ग़ुलाम सादिक़ और अध्यात्मिक फ़र्ज़ंद की बैअत करके उसकी आग़ोश में आ जाएगा, उस के लिए एक मर्तबा फिर उसी तरो ताज़गी का ज़माना आएगा जिसका मुशाहिदा उम्मत मुहम्मदिया ने अपने आक़ा-ओ-मुता हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अह्द मुबारक में किया था और उस वक़्त फिर "सहाबा से मिला जब मुझ को पाया" की नवीद इन ख़ुश-नसीबों के लिए पूरी होगी।

हदीस में मुंदरज क़तल-ओ-ग़ारत को यदि रूपक के लिया जाए तो फिर उसके अर्थ ये होंगे कि जिस तरह सही बुख़ारी में "يَضَعَ الْحَرْبَ" वाली हदीस में मज़कूरा "فَيَكْسِرَ الصَّلِيبَ وَيَقْتُلَ الْخِنْزِيرَ" का हक़ीक़ी अर्थ सलीब तोड़ना और सिर मारना नहीं। बल्कि इस से मुराद ईसाइयत की तरफ़ से इस्लाम पर होने वाले आरोप का मुंहतोड़ उत्तर देना मुराद है, इसी तरह इमाम महदी के माध्यम से मुसलमानों के क़तल से मुराद उन में राह पा जाने वाले ग़लत अक़ायद का क़िला क़मा करना और दीन की तजदीद कर उसे आंहज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तालीमात के ऐन अनुसार दुनिया में रायज करना होगा।

अतः मेरे ख़्याल में यदि इस हदीस को इस तरह लिया जाए तो ज़्यादा बेहतर व्याख्या बनती है और क़तल की भी वज़ाहत हो जाती है।

प्रश्न : एक अरब मित्र ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में लिखा कि क्या जमाअत अहमदिया अबाज़िया फ़िर्क़ा की हदीस की किताब "मस्नद अल् रबीअ बिन हबीब" में वर्णन अहादीस को सही समझती और उन पर अमल करती है? हुज़ूर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि 30 मई 2020 मे इस इस्तफ़सार पर निम्नलिखित इरशाद फ़रमाया। हुज़ूर ने फ़रमाया :

लाम अहादीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में जमाअत अहमदिया का अक़ीदा सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात की रोशनी में यह है कि क़ुरआन-ए-करीम और सुन्नत के बाद तीसरा माध्यम से हिदायत का हदीस है और वे क़ुरआन की ख़ादिम और सुन्नत की ख़ादिम है। लेकिन जो हदीस क़ुरआन और सुन्नत के विपरीत हो और तथा ऐसी हदीस की नक़ीज़ हो जो क़ुरआन के अनुसार है या ऐसी हदीस हो जो सही बुख़ारी के मुख़ालिफ़ है तो वह हदीस क़बूल के लायक़ नहीं होगी। क्योंकि उस के क़बूल करने से क़ुरआन को और उन समस्त अहादीस को जो क़ुरआन के मुवाफ़िक़ हैं रद्द करना पड़ता है। हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि हमारी जमाअत का यह कर्तव्य होना चाहिए कि यदि कोई हदीस मुआरिज़ और मुख़ालिफ़ क़ुरआन-ओ-सुन्नत न हो तो चाहे कैसे ही अदना दर्जा की हदीस हो इस पर वह अमल करें और इन्सान की बनाई हुई फ़िक़्ह पर उसको प्राथमिकता दें। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि क़ुरआन शरीफ़ की इत्तेबा करें और अहादीस की जो पैग़ंबर ख़ुदा से साबित हैं इत्तिबा करें। ज़ईफ़ से ज़ईफ़ हदीस भी इस शर्त के साथ कि वह क़ुरआन शरीफ़ के मुख़ालिफ़ न हो हम उसे वाजिबुल अमल समझते हैं। हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यदि कोई सही प्रमाणित हदीस क़ुरआन-ए-करीम से स्पष्ट रूप मे मुख़ालिफ़ हो गो वह बुख़ारी की हो या मुस्लिम की मे कदापि उस की ख़ातिर इस तर्ज़ के अर्थ को जिससे विपरीत क़ुरआन लाज़िम आती है क़बूल नहीं करूँगा।

अतः जो भी हदीस ऊपर वर्णित मयार के अनुसार होगी, चाहे वह किसी भी किताब की हो जमाअत अहमदिया के नज़दीक काबिल-ए-क़बूल और हुज्जत के योग्य है।

प्रश्न : किसी महिला का अपनी मर्ज़ी से अपना बच्चा अपनी जेठानी को देकर, कई वर्ष बाद दोनों ख़ानदानों में मतभेद की सूरः पैदा हो जाने पर माँ की तरफ़ से बचा की वापसी के मुतालिबा के बारे में एक पत्र हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ख़िदमत अक़्दस में मौसूल हुआ। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने तिथि 24 जून 2020 ई. में इस बारे में निम्नलिखित हिदायात अता फ़रमाएं। हुज़ूर ने फ़रमाया :

उत्तर : आम दुनयावी वस्तुओं की लेन-देन में जब इन्सान अपनी मर्ज़ी और ख़ुशी से किसी को अपनी चीज़ दे देता है तो फिर उस चीज़ की वापसी के मुतालिबा को पसंदीदगी की नज़र से नहीं देखा जाता। औलाद जबकि इस किस्म की दुनयावी वस्तुओं में तो शुमार नहीं होती लेकिन फिर भी जब कोई व्यक्ति अपनी मर्ज़ी और ख़ुशी से किसी को अपना बच्चा देदे और दूसरा व्यक्ति उसे अपनी औलाद की तरह रखे तो फिर उसकी वापसी का मुतालिबा भी अख़लाक़न पसंदीदा नहीं इसी लिए जमाअती क़ज़ा ने समस्त हालात का जायज़ा लेकर यही निर्णय दिया है कि हक़ीक़ी माँ का अपने बच्चा की वापसी का मुतालिबा दरुस्त नहीं।

मेरे नज़दीक यदि बच्चा की उमर नौ वर्ष से ज़्यादा है तो अब फ़िक़्ही उसूल ख़यार अल् तमीज़ के तहत इस मुआमले का निर्णय होना चाहिए और बच्चे से पूछना चाहिए कि वह किस के पास रहना चाहता है, जहां बच्चा अपनी मर्ज़ी और ख़ुशी से जाने का इंदीया दे बच्चा को वहीं रखा जाए।

अल्लाह तआला आप दोनों ख़ानदानों को अक़्ल और समझाता फ़रमाए, आप ख़ुदा तआला के भय और तक़्वा को मद्द-ए-नज़र रखते हुए केवल उसकी रज़ा की ख़ातिर एक दूसरे के लिए अपने जायज़ हुक़ूक़ छोड़ कर इन झगड़ों को ख़त्म करने वाले हों। आमीन।

प्रश्न : हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ जमाअत अहमदिया घाना के विद्यार्थियों की virtual नशिस्त तिथि 5 दिसंबर2020 ई. में एक तालिब-ए-इलम के इस प्रश्न पर कि जो लोग ख़ुदा तआला को नहीं मानते उनको समझाने के लिए सबसे मज़बूत दलील कौन सी है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

उत्तर : बात यह है कि जो लोग ख़ुदा तआला को नहीं मानते वह बात सुनना

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ
Sohail Ahmad Nasir and Family
Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

भी नहीं चाहते। ख़ुदा तआला की ज़ात की मज़बूत दलीलें तो अपना ज़ाती अनुभव है। आप उनको कहें कि तुम कहते हो ख़ुदा नहीं है मैं कहता हूँ ख़ुदा है। मैंने ख़ुदा से मांगा, उसने मुझे दे दिया। आपकी कोई दुआ क़बूल हुई नाँ? अपने कभी दुआ की, आपकी दुआ क़बूल हुई कि नहीं हुई? (तालिब-ए-इलम ने अर्ज़ किया कि जी, जी क़बूल हुई) बस तो जो ख़ुदा को नहीं मानते उनसे कहो कि तुम कहते हो कि ख़ुदा तआला नहीं है। मैं ने तो अल्लाह तआला से मांगा और मुझे अल्लाह तआला ने दिया। मेरा तो अल्लाह तआला की ज़ात में ज़ाती अनुभव है। मैं किस तरह कह दूं कि ख़ुदा तआला नहीं है। हाँ तुम भी यदि कोशिश करोगे तो फिर तुम्हें भी अल्लाह मिल जाएगा। लेकिन ये लोग जो ख़ुदा को नहीं मानते ये लोग बड़े ढीट लोग होते हैं। यहां भी इक्का atheist है जिसका नाम richard dawkins है। वे भी ख़ुदा तआला को नहीं मानता। और उसने ख़ुदा तआला के ख़िलाफ़ किताब भी लिखी है। मैं ने इस को five volume commentary भी भिजवाई और "इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी" और दूसरी किताबें भी भिजवाईं। और मैंने कहा ये पढ़ो फिर हमसे बात करो, तुम्हें पता लगे कि ख़ुदा क्या है और ख़ुदा का क्या तसव्वुर है। उसने कहा मैंने कुछ नहीं पढ़ना। केवल तुम मेरी किताब पढ़ो, मैं ने तुम्हारी किताबें कोई नहीं पढ़नी। तो ये लोग ढीट होते हैं, और जो ढीट हो जाएं उन्होंने किसी तरह नहीं मानना। हाँ जिनके अंदर थोड़ी सी नेक फ़ित्रत होती है उनसे ज़ाती सम्बन्ध रखो और उनको फिर अपने ज़ाती सम्बन्ध की वजह से ख़ुदा तआला के क़रीब ले के आओ। कई दफ़ा जो अपना क़ुरब है वह भी असर डालता है और दूसरे इन्सान के लिए परिवर्तन का बाइस बन जाता है। तो ज़ाती अनुभव जो है वह सबसे मोस्सर चीज़ है। यहां मेरे पास भी कई दफ़ा मुलाक़ातें करने वाले, प्रैस वाले कुछ लोग आते हैं। कुछ ने बाद में इज़हार किया कि हम ख़ुदा को तो नहीं मानते लेकिन यदि कभी ख़ुदा को माना तो हम तुम्हारे ख़लीफ़ा की वजह से मानेंगें किउसने हमें ख़ुदा तआला की सही तरह बात बताई है। फिर दिलों को नरम करने के लिए दुआ होनी चाहिए कि अल्लाह तआला दिलों को नरम भी करे। इसलिए अपना ज़ाती नमूना जो है वह बहुत आवश्यक है वह पेश करें और दुआ की स्वीकृति के लिए अपने अनुभवत वर्णन करें। सब से ज़्यादा तो यह है कि मेरे साथ अल्लाह का क्या सुलूक है। जब अपने साथ अल्लाह का सुलूक बताएँगे तो वह जो first-hand experience है इस से लोग फिर ज़्यादा impressed होते हैं। बाक़ी दलीलें तो बेशुमार हैं। "हमारा ख़ुदा" है "हस्ती बारी तआला के दस दलायल" हैं, हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो की किताब "हस्ती बारी तआला" है। ये सारी किताबें उर्दू में भी और इंग्लिश में भी आगई हैं। ये पढ़ो और उनको भी ये पढ़ने के लिए दो। इसी तरह यदि कोई पढ़ा लिखा आदमी है और वह पढ़ना जानता है तो इस को एक तो "इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी" पहले देनी चाहिए, फिर "हस्ती बारी तआला के दस दलायल" हैं वह देनी चाहिए। ये छोटी छोटी किताबें हैं। फिर हज़रत ख़लीफ़ा राबे की किताब revelation rationality है उसका एक chapter जो ख़ुदा तआला की ज़ात पर है वह भी बाज़ों को प्रभावित कर देता है। "हमारा ख़ुदा" की भी इंग्लिश ट्रांसलेशन हो चुकी है वह देनी चाहिए कि पढ़ो। अब पढ़ने के बाद भी यदि कोई नहीं मानता तो हमारा काम तो केवल संदेश पहुंचाना है, किसी की हिदायत के लिए हम गारंटी नहीं दे सकते। हिदायत की ज़िम्मेदारी अल्लाह तआला ने अपने सपुर्द ली है। हमारे सपुर्द केवल तब्लीग़ की ज़िम्मेदारी डाली है कि हम तब्लीग़ करें और अल्लाह तआला के रस्ता की तरफ़ ले के आएं।

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT

AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

प्रश्न : इसी मुलाक़ात में एक और तालिब-ए-इलम ने अर्ज़ किया कि ख़ुदा तआला का क़ुरब हासिल करने का सबसे बेहतरीन माध्यम क्या है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस प्रश्न के उत्तर में फ़रमाया :

उत्तर : अल्लाह की इबादत करो। अल्लाह तआला ने बता दिया कि मैंने इन्सान को इबादत के लिए पैदा किया है। وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ और अपनी पैदाइश का जो हक़ है वह अदा करो। पहली बात तो अल्लाह तआला ने फ़रमाई ईमान बिलग़ैब। ईमान बिलग़ैब के बाद अल्लाह तआला ने फ़रमाया يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ नमाज़ें क़ायम करो। अल्लाह तआला का आदेश है नमाज़ क़ायम करो, तो दूसरी अहम चीज़ इबादत है। अल्लाह तआला पर ईमान लाने के बाद नमाज़ों की अदायगी है। फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि नमाज़ में इन्सान जब सज्दे की हालत में होता है उस वक़्त वह अल्लाह तआला के सबसे क़रीब होता है। इसलिए सज्दे में अल्लाह तआला से दुआ करो कि अल्लाह तआला हमें अपना क़ुरब अता करे।

जो तुमसे मांगता हूँ वह दौलत तुम्हें तो हो अल्लाह से कहो जो दौलत मैं तुझसे मांग रहा हूँ वह तुम ही हो। मुझे पैसा नहीं चाहिए, मुझे दुनिया नहीं चाहिए। मुझे तेरा क़ुरब चाहिए और जब तेरा क़ुरब मिल जाएगा तो दुनिया की दौलत भी मेरी लौंडी बन जाएगी, मेरी ग़ुलाम बन जाएगी और दुनिया की सहूलतें भी मेरी ग़ुलाम बन जाएँगी। और मेरी रूहानियत भी बढ़ जाएगी। तो फिर सज्दे में दुआ किया करो कि अल्लाह तआला अपना क़ुरब अता करे। ठीक।

प्रश्न : इसी virtual नशिस्त तिथि 5 दिसंबर 2020 ई. में एक और तालिब-ए-इलम ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि नमाज़ में लज़्ज़त कैसे हासिल कर सकते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया

उत्तर : लज़्ज़त कैसे हासिल कर सकते हैं? इस का एक सादा सा तरीक़ा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह बताया है कि तुम रोनी शक्ल बनालो। जब इन्सान ज़ाहिरी तौर पर अपनी शक्ल बनाता है तो जैसी हालत तारी करने की कोशिश करता है दिल की भावनाएं भी फिर वैसे होने शुरू होजाते हैं। जब सूरः फ़ातेहा पढ़ रहे हो तो إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ को बार-बार दोहराओ और ग़ौर करो और रोनी शक्ल बनाते जाओ तो एक वक़्त मैं तुम्हें रोना आजाएगा। जब तुम्हें रोना आएगा, जब दिल पर रिक़्क़त तारी होगी, नरमी पैदा होगी तो फिर तुम्हें इस में एक लज़्ज़त आनी शुरू होगी। फिर जब तुम रुकू में जाओगे, फिर तुम दुआ पढ़ोगे फिर तुम्हें लज़्ज़त आएगी। फिर समेअल्ला कहोगे तो फिर तुम्हें लज़्ज़त आएगी। सज्दे में जाओगे फिर बेचैनी से तड़पोगे, फिर तुम्हें लज़्ज़त आएगी। तो उसी शक्ल को अपने आप पर तारी करना पड़ेगा। एक मुजाहिदा है, एक कोशिश है, वह कोशिश करोगे तो फिर लज़्ज़त पैदा होती जाएगी। और जब एक दफ़ा लज़्ज़त आजाएगी तो फिर तुम्हें मज़ा आता रहेगा। प्रत्येक दफ़ा ही तुम कोशिश करोगे कि मैं नमाज़ में अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर हूँ और रोऊँ तो मुझे मज़ा आए, मुझे लुतफ़ आए और जो अल्लाह के आगे सजदा मैं रोने का मज़ा आता है नाँ वह प्रत्येक मज़ा से बहुत बढ़के होता है। ठीक है? और अल्लाह से यह दुआ करो कि जिस अह्द के साथ तुम जमाअत अहमदिया में आए हो अल्लाह तआला इस अह्द को पूरा करने की, निभाने की तौफ़ीक़ दे। और तुम एक अच्छे मुरब्बी और मुबल्लिग़ बन के निकलो और अपने लोगों में तब्लीग़ करके इस क़ौम को अल्लाह तआला के सामने झुकाने वाले बनो। और फिर उनमें से भी वे लोग पैदा हूँ जिनको इबादतों में लज़्ज़त आए।

(ज़हीर अहमद ख़ान, मुरब्बी सिलसिला, इंचार्ज विभाग रिकार्ड दफ़्तर पी लंदन)

(धन्यवाद सहित अख़बार अल्-फ़ज़ल इंटरनैशनल 3 दिसंबर 2021)

★ ★ ★

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 2 March 2023 Issue No. 9

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

दरुस्सना क़ादियान (व्यावसायिक (तकनीकी) प्रशिक्षण केंद्र) Ahmadiyya Vocational (technical) training centre, Qadian में दाख़िला शुरू है, कला सीखने के इच्छुक युवा जल्दी करें

समस्त अहमदी नौजवानों की जानकारी के लिए घोषणा की जाती है कि विभाग व्यावसायिक (तकनीकी) प्रशिक्षण केंद्र क़ादियान में दाख़िला शुरू हो गया है। विभाग में इलेक्ट्रीशियन,प्लंबिंग, वेल्डिंग/डीज़ल मिकैनिक Motor vehicle mechanic / AC & refrigerator और कम्पयूटर के एक वर्ष के कोर्स करवाए जाते हैं और सरकारी विभाग NSIC का certificate दिया जाता है। कला सीखने के इच्छुक युवाओं के लिए बेहतरीन अवसर है और जो युवा अपने स्कूल की शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके इन कोर्सज़ में दाख़िला लेकर पूर्णता लाभ उठा सकते हैं। क़ादियान से बाहार के अहमदी नौजवानों के लिए जमाअत के प्रशासन के अधीन होस्टल और खाने की भी व्यवस्था है। होस्टल और खाने के खर्चों की कोई फ़ीस नहीं ली जाती है। इच्छुक युवा तुरंत निम्नलिखित नंबरों पर सम्पर्क करें।

फ़ोन नंबर : 9872923363, 9872725895, 8077546198

e-mail : darulsanaat. qadian @gmail. com

(प्रिंसिपल दरुस्सना क़ादियान)

★ ★ ★

128वां जलसा सालाना क़ादियान 29, 30, और 31 दिसम्बर 2023 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 29,30,31 दिसंबर 2023 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन॥

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

इस सुंदर उपमा में बताया है कि तेरा हाथ हर वक़त उनकी ख़िदमत में लगा रहना चाहीए।

इस आयत में यह भी इशारा कर दिया कि इन्सान साधारणतः माता पिता की वैसी ख़िदमत नहीं कर सकता। जैसी की माँ बाप ने उस की बचपन में की थी। इस लिए फ़रमाया कि हमेशा दुआ करते रहना कि हे ख़ुदा तो उन पर रहम कर, ताकि जो कमी अमल में रह जाए दुआ से पूरी हो जाएगी। के माने तशबीया के भी होते हैं। अनुमानों की दृष्टि से इशारा किया गया है कि बुढ़ापे में माँ बाप को वैसी ही ख़िदमत की ज़रूरत होती है जैसे कि बच्चे को बचपन में।

माता पिता के लिए यह दुआ इस लिए भी सिखाई गई है कि जो अल्लाह तआला से दुआ करता रहेगा उसे ख़ुद भी अपना फ़र्ज़ अदा करने का ख़्याल रहेगा।

अर्थात अगर ऐसी नेक नीयती अपने दिल में पैदा करे जो ऊपर वर्णन हुई है तो फिर ख़ुदा तआला भी उस के उयूब पर पर्दा डाल देता है अर्थात उस के अमल में जो कमी रह जाए अल्लाह तआला उसे पूरी कर देता है। इस आयत का मज़मून इस हदीस से भी मिलता है जो ऊपर गुज़र चुकी है और जिसका यह मज़मून है कि माता पिता की ख़िदमत का अवसर पाकर भी जिसके गुनाह न बख़्शे जाएं इस पर लानत हो क्योंकि इस आयत का मज़मून यही बताता है कि जो सालेह होगा अर्थात ऊपर के अहकाम के मुताबिक़ अमल करेगा तो इस से ख़ुदा तआला मग़फ़िरत का मुआमला करेगा।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4 पृष्ठ 322 मुद्रित कादियान 2010 ई.)

★ ★ ★

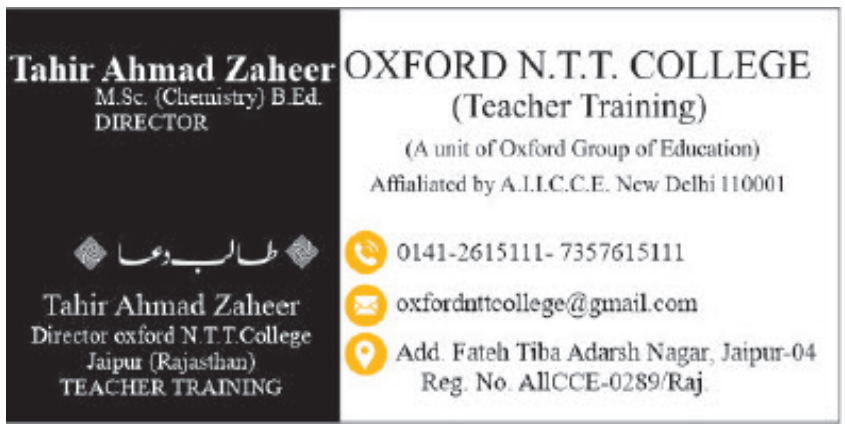

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad